जून-२०१८ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून-२०१८

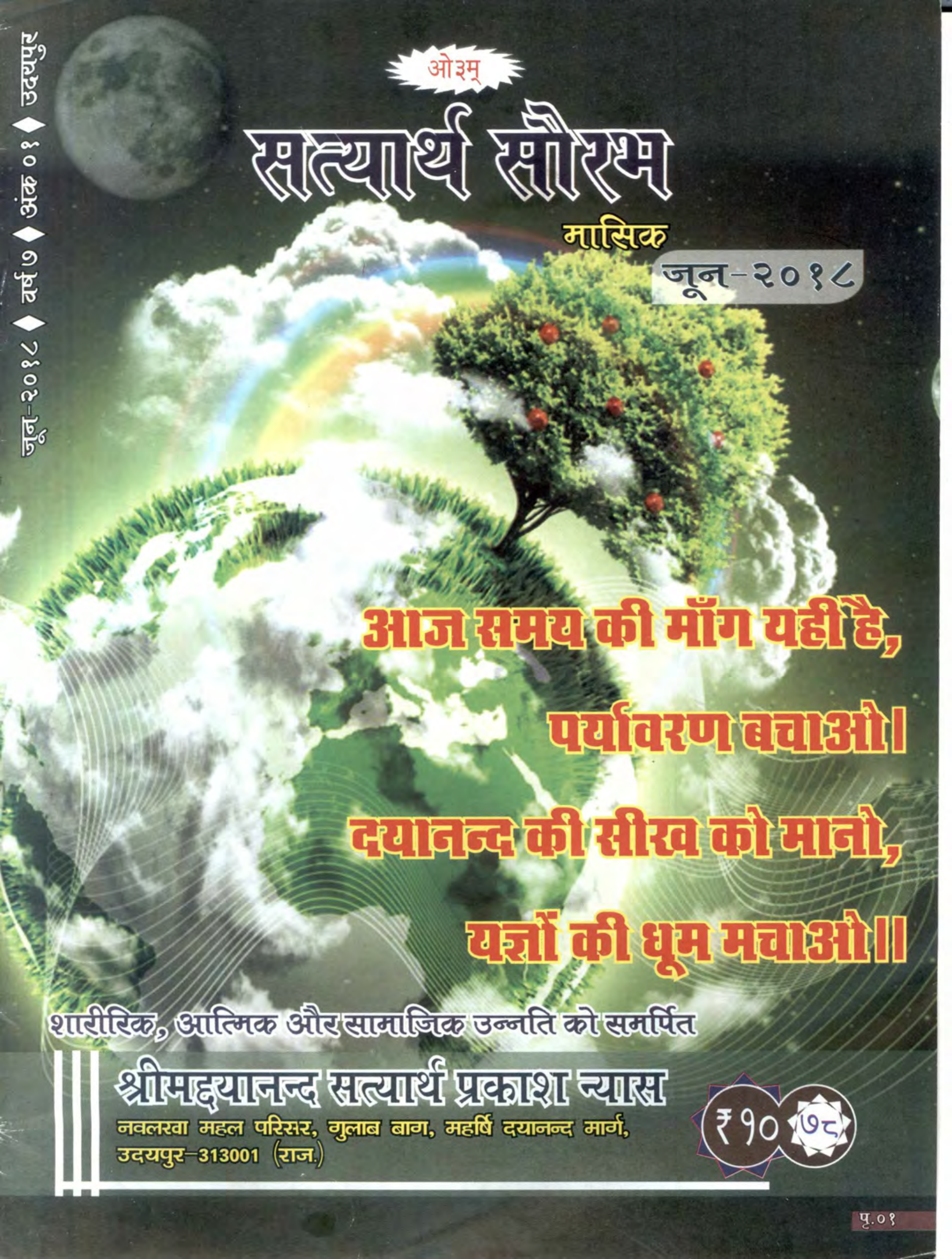

आज समय की माँग यही है,
पर्यावरण बचाओ।
दयानन्द की सीख को मानो,
यज्ञों की धूम मचाओ॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १०

७८

प्रकृति जैसी शुद्धता
हमारी पहचान
MDH
मसाले
असली मसाले सच – सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
Chunky Chat masala
Kitchen King
(MIXED SPICES POWDER)
Chana masala
(CHHOLE KA MASALA)
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
Hygienic, Flavourful & Tasty
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - 11000 रु.	$ 1000
आजीवन - 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय - 400 रु.	$ 100
वार्षिक - 100 रु.	$ 25
एक प्रति - 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

June - 2018

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४ वेद सुधा
०५ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/१८
०९ पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल
१० टैक्नोलॉजी की विनाशकारी घुड़दौड़
११ महान् योद्धा
१३ बन्धन और मोक्ष
१८ सिद्धियों का यथार्थ स्वरूप
२० युद्ध हेतु सन्नद्ध एक सैनिक
२३ वेदों के सन्दर्भ में धार्मिक परम्परा
२८ स्वास्थ्य- जब पैरों में हो दर्द
२९ कथा सरित- दुआओं में याद रखना
३० सत्यार्थ पीयूष- नियम है तो ......

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ०१

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

बहुत बोलने वाला लघु सम्पदा

अददा अर्भा महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या। - ऋग्वेद १/५१/१३

(इन्द्र) प्रभो! (तूने) (महते वचस्यवे) महत्- बहुत बोलने वाले के लिए (अर्भाम् अददा) लघुसम्पदा दी। (कक्षी-वते सुन्वते) अंगुलियों वाले सोमसवनी के लिए (वृचयाम् अददा) वृचया दी। (वृषण्-अश्वस्य) वृषण्-अश्व की (वाणी) (मेना अभवः) मेना हो गई। (सु-क्रतो) सु-साधक! (ते ता विश्वा प्र-वाच्या) (तव तानि विश्वानि प्र-वाच्यानि) तेरे वे सब प्र-वचन (सवनेषु इत्) सवनों-साधनायज्ञों में ही (प्रकथनीय हैं)।

१. सम्पदा दो ही तो हैं, भौतिक और ब्राह्म। मात्रा भी दो ही होती हैं, लघु और विशाल, थोड़ी और बहुत। भौतिक सम्पदा अर्भा है, लघु है, अवर है, विनश्वर है, विकारी है, बन्धनकारिणी है। ब्राह्म सम्पदा महत् है, महान् है, वर है, परम है, शाश्वत् है, निर्विकार है, मोक्षदायिनी है। साग-सब्जी, फल बेचनेवाले गला फाड़-फाड़ कर आवाजें लगाते हैं, फिर भी दिन-भर में कुल मिलाकर दो, चार, दस, बीस रुपये कमा पाते हैं। जवाहरात बेचनेवाला जौहरी अपनी दुकान पर मौन बैठा रहता है और एक ही ग्राहक से सैकड़ों, हजारों रुपये कमा लेता है। भक्त भी दो प्रकार के होते हैं, शोर मचानेवाले और एकान्त में मौन साधना करनेवाले। शोर मचाने वाले भक्त अखण्ड कीर्तन करते हैं। न स्वयं चैन लेते हैं, न दूसरों को सुख की नींद सोने देते हैं। टुक देखें तो सही उन्हें कितनी ब्राह्मसम्पदा हाथ लगी, वे कितने निर्विकार बने और वे कितने पग मोक्ष की ओर बढ़े। लाउड़स्पीकर लगा-लगा कर अखण्ड पाठ हो रहे हैं, शोर-गुल में न विद्यार्थी पढ़ पा रहे हैं, न रोगी कल पा रहे हैं। कोई उनसे पूछे कि अखण्ड पाठों से उन्हें कितनी ब्राह्म सम्पदा मिली। **असली बात तो यह है कि शोर-शराबे की भक्ति भक्तों को भगत जी तो बना देती है किन्तु उससे उनको लेश मात्र ब्राह्मसम्पदा प्राप्त नहीं होती है।**

स्मरण रखिए, ब्राह्मसम्पदा एकान्त, शान्त स्थान में योगशास्त्र की विधि से समौन योगासन में स्थित होकर साधना करने से ही प्राप्त होती है। ब्रह्म एकान्त और मौन में मिलता और बोलता है। (God meets and speaks in seclusion and silence) यदि आप ब्रह्म से मिलना और बात करना चाहते हैं तो एकान्त में समौन ध्यान कीजिए।

21 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव- 6 से 8 अक्टूबर 2018

कवि ने कितना सुन्दर कहा है,
वह मेरे साथ होते हैं गोया। जब कोई दूसरा नहीं होता।
He speaks to me, when there is none else.
साधारण बोली में उर्दू के इस शेर को इस प्रकार लिखा जा सकता है।
वह मेरे साथ करते हैं बातें। जब कोई दूसरा नहीं होता।

फूहड़ भक्ति के इस युग में क्या कोई समझेगा भक्ति के इस रहस्य को? मन्दिरों में, गुरुद्वारों में, आर्यसमाजों में, चर्चों में प्रातः, मध्याह्न, सायं, रात्रि, जब देखिए तब शोर ही शोर है। कहीं भी तो कभी लोग शान्त भाव से आँख, कान, मुख मूंदकर समौन

प्रभु का आह्वान और ध्यान नहीं करते।

२. वृचया नाम उस छेदन-भेदन-विलोडन-विश्लेषण क्रिया का है जिससे तत्व की प्राप्ति होती है। दोनों हाथों की दसों अंगुलियों से डोरी को घुमाकर रई से विलोडन करते हैं तो दुग्ध अथवा दही में निहित सोम (मक्खन) उपलब्ध होता है। उसी प्रकार **अष्टांग योग की यम-नियम-रूप दस अंगुलियों से आत्म विलोडन करके जब संयम (धारणा, ध्यान, समाधि) का आश्रय लिया जाता है तो भक्ति के तत्त्व (आत्मा तथा परमात्मा) का साक्षात्कार होता है।**

३. वृषणू-अश्व इन्द्र के उस बलिष्ठ घोड़े का नाम है जिस पर सवार होकर इन्द्र सकल विघ्न-बाधाओं को लाँघकर लक्ष्य पर पहुँचता है। इन्द्रियों का स्वामी यह आत्मा ही इन्द्र है। चित्त इन्द्र का वह वृषणू-अश्व है जिसकी वृत्तियों का निरोध करके द्रष्टा आत्मा स्वरूप में अवस्थित होकर परम लक्ष्य पर पहुँचता है। 'मेना' नाम तत्त्ववोधिनी वाणी का है। वृषणू-अश्व पर स्थित होकर जिस योगी ने परमा (परम सम्पदा) को प्राप्त किया है उसी की वाणी मेना कहाती है। तत्त्ववेत्ता की वाणी ही जन-जन को तत्त्व का बोध कराती है। जिसने उसे नहीं जाना, वह क्या जनाएगा! वह तो वैखरी बकवाद ही करेगा।

४. योग प्रशिक्षण और आध्यात्मिक प्रवचन योगशिविरों तथा साधनास्थलों में ही किए जाने चाहिए। अधिकारी ही इन शिविरों में सम्मिलित होते हैं। और जिज्ञासु ही इन रहस्यों को समझकर हृदयंगम करते हैं; पात्र ही साधना करते हैं। हर काम हर स्थान पर नहीं किया जाता है। कुश्तियाँ अखाड़ों में ही लड़ी जाती हैं। विद्याध्ययन विद्यालयों में ही सुचारुता से होता है। इंजिनियरी इंजिनियरिंग कॉलेजों में ही सिखाई जाती है। डॉक्टरी का प्रशिक्षण मेडिकल कॉलेजों में ही दिया जाता है। उसी प्रकार, आध्यात्मिक प्रवचन तथा प्रशिक्षण भी सुसंस्कृत स्थानों और शिविरों में ही किया जाता है।

- स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

(साभार- वेदालोक-द्वितीय रश्मि)

❑❑❑

पूरा नाम-

चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	त्य १		२	२	मे	२	र २		
३	प्य	३	३	क ३		४	रि	४	न्न ४
५	च्छा ५		६	पा	६		७	७ वा	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जीव नित्य है या अनित्य?

२. समाधि दशा में योगी को किसका प्रत्यक्ष होता है?

३. जीव तथा परमात्मा के बीच कैसा सम्बन्ध है?

४. जीव शरीर में विभु है वा परिच्छिन्न?

५. पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा को वैशेषिक दर्शन में क्या-क्या है?

६. वैशेषिक में प्राण को बाहर से भीतर लेने को क्या कहा गया है?

७. क्षुधा, तृषा, हर्ष, शोकादि किसके गुण हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/१८ का सही उत्तर

१. पाप और दुःख		२. ओ३म्	३. निराकार
४. धर्मपथ	५. दया	६. ईश्वर	७. जप

"विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०१८

आत्म निवेदन

इतिहास पर बदनुमा दाग

किसी इतिहासकार ने संभवतः सही ही लिखा है कि विश्व इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ विजेताओं ने विजित प्रदेशों में पूर्व से उपस्थित सड़कों, चौराहों अथवा स्मारकों के नाम बदल दिए अथवा स्वयं के महान् पुरुषों के नाम पर नवीन निर्मित इमारतों आदि के नाम रखे, उनका मानना है कि ऐसा विजेता का शासितों पर दबदबा बनाने के हेतु से किया जाता है। इसका एक पक्ष यह भी है कि चिरकाल तक शासितों में यह ज्ञान बना रहे कि वे विजेता थे और इसी कारण हमसे श्रेष्ठ थे। विश्वभर में जब इस दृष्टिकोण से नजर डालते हैं तो यह कथन ठीक दीखता है। भारत की बात करें तो ७०० वर्ष तक भारत ने यवन आक्रान्ताओं की गुलामी सहन की। ये विदेशी मूल के बर्बर लोग प्रायः भारत की अकूत सम्पदा को लूटने के लिए आये और हमारी कमजोरियों के कारण हमारे शासक बन गए। इनके द्वारा नवीन निर्माण तो कम किये गए परन्तु पुरानी इमारतों, सड़कों, नगरों को अपना नाम अवश्य दे दिया। लगभग ७०० से भी अधिक नगरों और गाँवों के नाम अकबर, बाबर, हुमायूँ, औरंगजेब आदि मुगल शासकों के नाम पर हैं। सैंकड़ों स्मारक हैं। बाद में लगभग ३०० वर्ष ब्रिटेन ने हम पर राज्य किया। ब्रिटिश राज में सभी नाम ब्रिटिश शासकों के नाम पर रखे गए।

अगर हम निष्पक्ष रूप से विचार करें तो सड़कों, चौराहों अथवा स्मारकों के नाम ऐसे महापुरुषों के नाम पर रखना समीचीन ही है जिन्होंने मानवीय उदात्त मूल्यों को पहचान दी हो और परहित में अपने जीवन को समर्पित कर दिया हो क्योंकि जब-जब भी हमारी भावी पीढ़ी इन नामों को देखेगी तो उनके व्यक्तित्व को भी जानना चाहेगी और उनसे प्रेरणा प्राप्त करेगी। ऐसे व्यक्तित्व राष्ट्र की सीमा से परे के भी हों तो भी स्वागत होना चाहिए। महान् वैज्ञानिक आइन्स्टीन के नाम पर निर्मित आइन्स्टीन टॉवर का उदाहरण हम देना चाहेंगे। १९१९ में जब ब्रिटिश खगोल शास्त्रियों ने आइन्स्टीन के सापेक्षता के सिद्धान्त को सही साबित कर दिया तो दुनिया भर में उनकी धूम मच गयी। १९२० में जर्मनी में बर्लिन के पास भव्य सोलर आब्जर्वेटरी को आइन्स्टीन टॉवर का नाम दिया गया। आइन्स्टीन यहूदी थे इस कारण हिटलर के शासन के दो महीने के बाद इसका नाम बदलकर १९३३ में **'Institute of Solar Physics'** रख दिया गया तथा आइन्स्टीन की प्रतिमा हटाकर एक पत्थर रख दिया गया। इस बीच आइन्स्टीन सदैव के लिए जर्मनी का बहिष्कार करके अमेरिका चले गए।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हिटलर के पतन के पश्चात् १९४५ में पुनः भवन का नाम आइन्स्टीन भवन रखा गया, यह ठीक उसी प्रकार स्वागत योग्य समझा जाना चाहिए जैसा कि भारत में औरंगजेब रोड का नाम बदलकर 'अब्दुल कलाम' रोड़ किया गया।

परन्तु मानवता विरोधी, स्वराष्ट्र विरोधी, क्रूर, अत्याचारी ऐसे व्यक्तियों,

जिन्होंने अपनी ताकत के बल पर इतिहास के किसी काल में स्वयं की प्रतिमाएँ व भवन आदि बनाए, आधुनिक काल में मानव मूल्यों की स्थापना की गरज से, इन स्मारकों, प्रतिमाओं के साथ क्या व्यवहार किया जाय विश्व भर में यह बहस जारी है। अधिकांश में स्वीकृति दासता के प्रतीकों को हटाने, क्रूर अमानवीय प्रथाओं को प्रचारित करने वालों को बहिष्कृत करने के सम्बन्ध में ही है।

हिटलर, सद्दाम हुसैन तथा होस्नी मुबारक की प्रतिमाएँ इसी कारण से धूल चाट रही हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् जर्मनी में सभी नाजी प्रतीकों को ध्वस्त कर दिया गया। एलाइड कौंसिल ने यह निर्णय लिया **"Any monument, memorial, poster, statue, edifice, street or highway name marker, emblem, tablet, or insignia which tends to preserve and keep alive the German military tradition, to revive militarism or to commemorate the Nazi Party, or which is of such a nature as to glorify incidents of war, and the functioning of military museums and exhibitions, and the erection, installation, or posting or other display on a building or other structure of any of the same, will be prohibited and declared illegal," the directive reads.**

स्टालिन तथा लेनिन का रूस में क्या स्थान रहा यह कौन नहीं जानता परन्तु रूस के विखराब के बाद स्टालिन तथा लेनिन वहाँ के रोल मॉडल नहीं रहे। चौराहों से उनकी प्रतिमाओं को हटाकर एक जगह इकट्ठा कर दिया गया है।

फ्रेंसिस्को फ्रेंको को कौन नहीं जानता जो लगभग चार दशक तक स्पेन का तानाशाह रहा। २००७ में स्पेन में एक कानून बनाया गया जिसमें प्रावधित किया गया है-

The law instructs the government to take measures to remove shields, insignia, plaques and other objects or mentions commemorating the military uprising, civil war or dictatorship- However, objects with artistic, architectural or religious significance are protected.

फ्रेंको की अंतिम प्रतिमा २००८ में मेनलैंड से हटायी गयी।

इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका में केप टॉउन विश्वविद्यालय से ब्रिटिश हुक्मरान सिसिल रोड्स की प्रतिमा आखिरकार हटा दी गयी। सिसिल रोड्स की रंगभेद की नीतियाँ तथा उसे पोषित करने के कारनामे सर्वविदित हैं।

ताइवान में चांग काई शेक के सैंकड़ों स्टेचू हटाकर एक पार्क में रख दिए गए हैं तथा सरकार चांग काई शेक मेमोरियल हॉल का नाम भी परिवर्तित करने पर विचार कर रही है।

इसी प्रकार २००३ में सद्दाम हुसैन कि प्रतिमा को जमींदोज किया गया।

ब्रिस्टोल ब्रिटेन में अप्रैल २०१७ में कॉलस्टन हॉल का नाम बदलने का निर्णय लिया गया है, कारण एडवर्ड कॉलस्टन १७ वीं शताब्दी का ऐसा व्यापारी था जिसने अधिकांश सम्पत्ति दासों को बेचकर बनायी थी।

यहाँ यह भी है कि पूर्वाग्रहों तथा दुराग्रह के कारण ऐसे निर्णय उचित नहीं जैसा कि पाकिस्तान में महात्मा गाँधी के साथ किया गया। पाकिस्तानी अखबार डॉन में छपे एक लेख के अनुसार पाकिस्तान से उस गाँधी की विदाई कर दी गयी जिसने विभाजन के बाद भी पाकिस्तान को उसके तथाकथित रूप से बकाया ५५ करोड़ रुपये दिलवाने के लिए उपवास रखा। अविभाजित भारत के करांची में एक बड़ा बाग हुआ करता था जिसे विक्टोरिया गार्डन के नाम से जाना जाता था। जब १६३४ में वहाँ गाँधी जी की एक विशाल सभा हुयी तो करांची म्युनिसिपल कॉरपोरेशन ने उसका नाम बदल कर महात्मा गाँधी गार्डन रखने की घोषणा की और महात्मा गाँधी ने भी इसे मौन स्वीकृति प्रदान की। पर विभाजन के बाद सब कुछ बदल दिया गया। डॉन में उक्त लेख का लेखक लिखता है-

We made sure not a single street, road of place which carried the name of a foreigner, British or Indian, or even Hindu for that matter, remains associated with its identity and historical importance- We changed them all.

पत्रकार अब्दुल मजीद छपरा के अनुसार गाँधी जी की एक सुन्दर कांस्य की प्रतिमा जिस पर 'स्वातंत्र्य, सत्य व अहिंसा के पर्याय महात्मा गाँधी' लिखा हुआ था, सिन्ध हाईकोर्ट बिल्डिंग के सामने थी जो उस समय किंग्सवे कहलाता था पर अब इसका अतापता भी नहीं है।

वस्तुतः इस विषय में हमारी सोच है कि इस प्रकार के सभी चिह्न ऐसे लोगों के नाम पर हों जिनका स्वराष्ट्र निर्माण, राष्ट्र रक्षा मे योगदान रहा। हमारी संस्कृति के प्रतीक हों। हमें तथा हमारी युवा पीढ़ी को संस्कार देने के साथ उनमें नैतिक मूल्यों की स्थापना में सहायक हो सकें। परन्तु तानाशाही प्रवृत्ति वाले क्रूर विदेशी शासकों, राष्ट्र विघातियों के 'मार्कर्स' नयी पीढ़ी को क्या उच्च सन्देश दे सकते हैं? अतः उनसे जितना जल्दी छुटकारा पालें, श्रेयस्कर है। ऊपर हमने विश्व भर में प्रायः यही प्रवृत्ति देखी है।

यह दुःखद प्रवृत्ति भारत में रही है कि आक्रान्ताओं, क्रूर, बर्बर शासकों को भी महिमा मंडित किया जाता रहा है। अकबर को महान् कहा जाता है जबकि यह ऐतिहासिक तथ्य है कि अकबर ने जब चित्तौड़ दुर्ग में प्रवेश किया तो ३०००० निर्दोष नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया। निसन्देह अकबर एक अत्यन्त विलासी बादशाह था। अन्य स्रोतों की बात छोड़ भी दें तो अकबरे आईनी लिखने वाले अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फैजल ने भी अकबर के हरम में ५००० स्त्रियों का होना स्वीकार किया है जबकि वस्तुतः इससे कहीं अधिक भयंकर नारकीय स्थिति थी। ऐसा व्यक्ति भारतीयों का रोल मॉडल कैसे हो सकता है? औरंगजेब की क्रूरता तो इतिहास में सर्वत्र बिखरी पड़ी है। पर हमारे अनेक तथाकथित बुद्धिजीवी औरंगजेब के वास्तविक चरित्र को स्वीकारने से परहेज करते हैं। ब्रिटिश हुक्मरानों ने भारत को सांस्कृतिक, आर्थिक हर दृष्टि से बर्बाद किया यह कोई नयी बात नहीं है। फिर ये हमारे प्रेरक, हमारे रोल मॉडल कैसे हो सकते हैं? **एक बात और है कि विपुल सांस्कृतिक वैभव के स्वामी 'भारत' को प्रेरणा लेने के लिए बाहर झाँकने की आवश्यकता ही नहीं है।** जहाँ के शासक श्री राम के जीवन चरित्र अर्थात् रामायण को मलेशिया के विद्यालयों में इसलिए अनिवार्यतः पढ़ाया जाता है कि वहाँ की नौजवान पीढ़ी इससे मानवीय मूल्यों को सीख सके, तो ऐसे ही सैंकड़ों सहस्रों महान् जीवन भारतीय नामकरणों के लिए सहज उपलब्ध हैं।

इन दिनों अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में जिन्ना के पोट्रेट को लेकर हंगामा मचा है। इसमें दो राय नहीं कि जिन्ना भारत का अपराधी है। अनेक विचारकों का मत है कि द्विराष्ट्र सिद्धान्त का बीज अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में बोया गया। जो भी हो जिन्ना की जिद ने देश का विभाजन किया। खून की नदियाँ बहाने के पाप से जिन्ना कैसे मुक्त होगा? जिन्ना के चित्र के समर्थक वा पुजारी जिन्ना को महिमा मंडित करना छोड़ें इसी में राष्ट्र का हित है। भारत में भारत के अपराधी को महिमामंडित करना किसी प्रकार से युक्तियुक्त नहीं है। अस्तु।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छावड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार)

पण्डित रामप्रसाद जयन्ती पर विशेष

सत्यार्थ प्रकाश ने तख्ता पलट दी

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल

मन्दिर में स्तुति-पूजा करने की प्रवृत्ति को देखकर श्रीयुत् मुंशी इन्द्रजीत जी ने मुझे सन्ध्या करने का उपदेश दिया। मुंशीजी उसी मन्दिर में रहने वाले किसी महाशय के पास आया करते थे। व्यायामादि के कारण मेरा शरीर बड़ा सुगठित हो गया था और रंग निखर आया था। मैंने जानना चाहा कि सन्ध्या क्या वस्तु है। मुंशीजी ने आर्य-समाज सम्बन्धी कुछ उपदेश दिए। इसके बाद मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इससे तख्ता ही पलट गया। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नवीन पृष्ठ खोल दिया। मैंने उसमें उल्लिखित ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन करना आरम्भ कर दिया। ....

मैं थोड़े दिनों में ही बड़ा कट्टर आर्यसमाजी हो गया। आर्यसमाज के अधिवेशन में जाता-आता। संन्यासी महात्माओं के उपदेशों को बड़ी श्रद्धा से सुनता। जब कोई संन्यासी आर्यसमाज में आता तो उसकी हर प्रकार से सेवा करता, क्योंकि मेरी प्राणायाम सीखने की बड़ी उत्कट इच्छा थी। .... जब मैं अंग्रेजी के सातवें दर्जे में था तब सनातन धर्मी पण्डित जगत प्रसाद जी शाहजहाँपुर पधारे उन्होंने आर्यसमाज का खण्डन करना प्रारम्भ किया। आर्यसमाजियों ने भी उनका विरोध किया और पं. अखिलानन्द जी को बुलाकर शास्त्रार्थ कराया। शास्त्रार्थ संस्कृत में हुआ। जनता पर अच्छा प्रभाव हुआ। पिताजी ने मुझसे कहा कि आर्यसमाजी हार गए, अब तुम आर्यसमाज से अपना नाम कटा दो। मैंने पिताजी से कहा कि आर्यसमाज के सिद्धान्त सार्वभौम हैं, उन्हें कौन हरा सकता है? अनेक वाद-विवाद के पश्चात् पिताजी जिद्द पकड़ गए कि आर्यसमाज से त्यागपत्र न देगा तो घर छोड़ दे। ..... मैं केवल एक कमीज पहने खड़ा था और पाजामा उतारकर धोती पहन रहा था। पाजामे के नीचे लंगोट बँधा था। पिताजी ने हाथ से धोती छीन ली और कहा 'घर से निकल'। मुझे भी क्रोध आ गया। मैं पिताजी के पैर छूकर गृह त्यागकर चला गया। ......मैं जंगल की ओर भाग गया। एक रात और एक दिन बाग में पेड़ में बैठा रहा। भूख लगने पर खेतों में से हरे चने तोड़ कर खाए, नदी में स्नान किया और जलपान किया। दूसरे दिन सन्ध्या समय पं. अखिलानन्द जी का व्याख्यान आर्यसमाज मन्दिर में था। मैं आर्यसमाज मन्दिर में गया। एक पेड़ के नीचे एकान्त में खड़ा व्याख्यान सुन रहा था कि पिताजी दो मनुष्यों को लिए हुए आ पहुँचे और मैं पकड़ लिया गया। जब मैं आठवें दर्जे में था, उसी समय स्वामी श्री सोमदेव जी सरस्वती आर्यसमाज शाहजहाँपुर में पधारे। उनके व्याख्यानों का जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ। कुछ सज्जनों के अनुरोध से स्वामीजी कुछ दिनों के लिए शाहजहाँपुर आर्यसमाज मन्दिर में ठहर गए। स्वामीजी की तबीयत भी कुछ खराब थी, इस कारण शाहजहाँपुर का जलवायु लाभदायक देखकर वहाँ ठहरे थे। मैं उनके पास आया-जाया करता था। प्राणपण से मैंने स्वामीजी महाराज की सेवा की और इसी सेवा के परिणामस्वरूप मेरे जीवन में नवीन परिवर्तन हो गया। मैं रात को दो-तीन बजे तक और दिन-भर उनकी सेवा-सुश्रुषा में उपस्थित रहता। .... स्वामीजी मुझे अनेक प्रकार के उपदेश दिया करते थे। उन उपदेशों को मैं श्रवण कर कार्यरूप में परिणत करने का पूरा प्रयत्न करता। वास्तव में वह मेरे गुरुदेव तथा पथ-प्रदर्शक थे। उनकी शिक्षाओं ने ही मेरे जीवन में आत्मिक बल का संचार किया जिनके सम्बन्ध में मैं पृथक् वर्णन करूँगा। कुछ नवयुवकों ने मिलकर आर्यसमाज मन्दिर में आर्यकुमार सभा खोली थी, जिनके साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक शुक्रवार को हुआ करते थे। वहीं पर धार्मिक पुस्तकों का पाठन, विषय विशेष पर निबन्ध-लेखन और पाठन तथा वाद-विवाद होता था।

आर्यकुमार-सभा से ही मैंने जनता के सम्मुख बोलने का अभ्यास किया। बहुधा आर्यकुमार-सभा के नवयुवक मिलकर शहर के मेलों में प्रचारार्थ जाया करते थे। बाजारों में व्याख्यान देकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार करते थे। ऐसा करते-करते मुसलमानों से बुबाहसा होने लगा। अतएव पुलिस ने झगड़े का भय देखकर बाजारों में व्याख्यान देना बन्द करवा दिया। आर्यसमाज के सदस्यों ने आर्यकुमार-सभा के प्रयत्न को देखकर उस पर अपना शासन जमाना चाहा, किन्तु आर्यकुमार किसी का अनुचित शासन कब मानने वाले थे! आर्यसमाज के मन्दिर में ताला डाल दिया गया कि आर्यकुमार-सभा वाले आर्यसमाज मन्दिर में अधिवेशन न करें। यह भी कहा गया कि यदि वे वहाँ अधिवेशन करेंगे, तो पुलिस को बुलाकर उन्हें मन्दिर से निकलवा दिया जाएगा। कई महीनों तक हमलोग मैदान में अपनी सभा के अधिवेशन करते रहे, किन्तु बालक ही तो थे, कब तक इस प्रकार कार्य चला सकते थे? आर्यकुमार-सभा टूट गई। तब आर्यसमाजियों को शान्ति हुई। आर्यकुमार-सभा ने अपने शहर में तो नाम पाया ही था। जब लखनऊ में कांग्रेस हुई तो भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन का भी वार्षिक अधिवेशन वहाँ हुआ। उस अवसर पर सबसे अधिक पुरस्कार लाहौर और शाहजहाँपुर की आर्यकुमार-सभाओं ने पाए थे, जिनकी प्रशंसा समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई थी। लगभग अट्ठारह वर्ष की उम्र तक मैं रेल पर न चढ़ा था। मैं इतना दृढ़ सत्य वक्ता हो गया था कि एक समय रेल पर चढ़कर तीसरे दर्जे का टिकट खरीदा था, पर इण्टर क्लास में बैठकर दूसरों के साथ-साथ चला गया। इस बात से मुझे बड़ा खेद हुआ। मैंने अपने साथियों से अनुरोध किया कि यह तो एक प्रकार की चोरी है। सबको मिलकर इण्टर क्लास का भाड़ा स्टेशन मास्टर को देना चाहिये। एक समय मेरे पिताजी दीवानी में किसी पर दावा करके वकील से कह गए थे कि जो काम हो वह मुझ से करा लें। कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने मुझे बुला भेजा और कहा कि मैं पिताजी के हस्ताक्षर वकालतनामें पर कर दूँ। मैंने तुरन्त उत्तर दिया कि यह तो धर्म के विरुद्ध होगा, इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता। वकील साहब ने बहुत कुछ समझाया कि एक सौ रुपए से अधिक का दावा है, मुकदमा खारिज हो जायेगा। किन्तु मुझ पर कुछ भी प्रभाव न हुआ, न मैंने हस्ताक्षर किए। अपने जीवन में सर्वप्रकार से सत्य का आचरण करता था, चाहे कुछ हो जाए, सत्य बात कह देता था।

टैक्नोलॉजी/आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस की विनाशकारी घुड़दौड़

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस पर मेरे एक वक्तव्य पर एक पाठक की प्रतिक्रिया तथा ऐसे ही अन्य अनेकों प्रगतिशील युवाओं के सम्भावित प्रश्नों के उत्तर में मैं यह कहना चाहूँगा कि वे आज संसार में टैक्नोलॉजी की दौड़ में अपने देश के पीछे रह जाने के भय से भयभीत होकर निरन्तर भागने में ही अपना गौरव मान रहे हैं, वे याद रक्खें कि अधिक वेग वाले दुर्घटनाग्रस्त भी ऐसे होते हैं कि उनके अंगों की पहचान भी नहीं होती। संसार जहाँ जा रहा है, वह भयानक मार्ग है। टैक्नोलॉजी उतनी ही उपयोगी है, जिससे मानव शरीर, मन, और आत्मा का पतन न हो पावे। अनेक शारीरिक व मानसिक रोग तथा पर्यावरण विनाश इस कथित वैज्ञानिक जीवन शैली की ही देन हैं। यह संसार उस भविष्य की ओर जा रहा है, जहाँ भोग के अनेक सुख साधन तो होंगे परन्तु भोगने वाला मनुष्य विषाक्त हवा, जल व भूमि के प्रभाव से नाना रोगों से ग्रस्त होता हुआ, अपने किए पर रो रहा होगा। जहाँ सब कुछ विष भरा होगा, संसार अशांत, शोकाकुल एवं हिंसा आदि जघन्य पापों से भरा होगा। उस समय सर अल्बर्ट आइंस्टीन की वह भविष्यवाणी सत्य होगी, जिसमें कहा था कि चौथा विश्व युद्ध ईंट, पत्थर व तलवारों से होगा

अर्थात् सम्पूर्ण टैक्नोलॉजी का विनाश हो जाएगा। आज जो कथित प्रगतिशील बैलगाड़ी का उपहास करता है, वह अभी नहीं समझेगा कि गाय व बैल का महत्व क्या है? जब उसकी समझ में आएगा, तब तक शायद गाय व बैलगाड़ी इस धरती पर बचेगी ही नहीं।

मेरे मित्रो! मैं एक वैदिक भौतिक शास्त्री होने के नाते आपको सुझाव दे रहा हूँ कि जब भौतिक विज्ञान अपनी ऊँचाइयों को पार कर लेगा, तब उसे यथार्थ आध्यात्मिक विज्ञान का सुखद अनुभव होगा। फिर यह मानव जहाँ उत्तम किस्म के विमानों का आविष्कार करेगा, वहीं बैल, घोड़ा, हाथी, पालकी व पैदल यात्रा का भी उपयोग करेगा। तब घातक अस्त्र-शस्त्र भी होंगे, परन्तु उन्हें वापस लौटाने व नष्ट करने के एंटी अस्त्र-शस्त्र भी होंगे। तब निरापद अति आवश्यक व न्यूनतम टैक्नोलॉजी होगी, वहाँ यज्ञादि से सुरभित व स्वस्थ पर्यावरण भी होगा। तब जहाँ धर्मरक्षा हेतु ही युद्ध होंगे, वहीं परस्पर महान् प्रेम व करुणा का वातावरण भी होगा। तब जहाँ सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को जानने हेतु लोक-लोकान्तर की यात्रा करेंगे, वहीं सृष्टि के स्रष्टा परमात्मा के ध्यान व समाधि अवस्था में परमानन्द का भी उपभोग करेंगे। हम दौड़ेंगे परन्तु जोश के साथ होश भी रखेंगे तथा दौड़ में अंधापन नहीं होगा, नकल नहीं होगी, बल्कि विवेकसम्मत लक्ष्य सदैव सम्मुख रहेगा। मैं ऐसे ही सत्यधर्म एवं कल्याणकारी विज्ञान का पक्षधर हूँ। मैं इस संसार को सुख-शान्ति व आनन्द का वह मार्ग बता रहा हूँ, जो वेदों, देवों व ऋषियों ने बतलाया था और जिसे संसार सर्वथा भूल गया था। हजारों वर्ष पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुनः उस मार्ग का संकेत किया था। जागो! मेरे प्रबुद्ध व जागरूक मानव! जागो! इस धरती को विनाश से बचा लो। अन्ततोगत्वा स्टीफन हॉकिंग भी ऐसा मानने लगे थे। वे सम्पूर्ण जीवन टैक्नोलॉजी का उपयोग करते-करते टैक्नोलॉजी को सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए खतरा मानने लगे थे। वे आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस को मानवता के लिए भारी संकट मानते थे।

Stephan Hawking believes that either artificial intelligence, human aggression or aliens will destroy the human race.

जीवन के यथार्थ अक्षर लिखने वाला ही होता है महान् योद्धा

सीताराम गुप्ता

यदि हमसे पूछा जाए कि संसार में सबसे बड़ा योद्धा कौन हुआ है अथवा है तो हम असमंजस में पड़ जाएँगे। इतिहास भरा पड़ा है अनेक योद्धाओं से। लेकिन वास्तविक योद्धा कौन है? गुरुग्रंथसाहिब में लिखा है, 'जो लरै दीन के हेत सूरा सोई।' सच्चा योद्धा वो जो दूसरों की रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगा दे। सच्चा दानी वो जो दूसरों की भूख मिटाने के लिए खुद भूखा रह जाए। जो अपने हाड़-मांस के शरीर की स्थूलता का विस्तार करने की बजाय दधीचि ऋषि की तरह किसी की रक्षा के लिए अपनी अस्थियाँ तक दान में दे दे वही है सच्चा दानी तथा वास्तविक योद्धा। इतिहास भरा पड़ा है ऐसे वास्तविक योद्धाओं से। गीता में एक श्लोक है :

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥ - गीता ३/२१

महापुरुष जो-जो आचरण करते हैं सामान्य व्यक्ति उसी का अनुसरण करते हैं। वह अपने अनुसरणीय कार्यों से जो आदर्श प्रस्तुत करते हैं सम्पूर्ण विश्व उसका अनुसरण करता है अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत आदर्श विश्व के तमाम लोगों के आदर्श बन जाते हैं।

एक बार गाँधीजी से जब कोई सन्देश देने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा कि मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है। चीन के प्रसिद्ध दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने भी कहा है कि अच्छे लोग अपने आचरण से दूसरों को उपदेश देते हैं, मुख से नहीं। वास्तव में संसार को वही लोग ऊपर उठाते हैं तथा जीवन प्रदान करते हैं जो कोई ग्रन्थ लिखने की अपेक्षा अपना जीवनग्रन्थ पीछे छोड़ जाते हैं। कहने का तात्पर्य ये है कि मात्र मौखिक उपदेश या ज्ञान का कोई महत्त्व नहीं है जब तक कोई अपने आचरण द्वारा उसे दूसरों तक नहीं पहुँचाता। एक अकर्मण्य व्यक्ति यदि कर्म का संदेश देगा तो कौन उसकी बात पर ध्यान देगा जबकि एक कर्मशील व्यक्ति को इसकी शिक्षा देने की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि उसका आचरण स्वयं कर्म करने की शिक्षा और प्रेरणा दे रहा है। इसी प्रकार एक अनैतिक व्यक्ति के नैतिकता विषयक संभाषण पर कोई ध्यान नहीं देगा। मुरलीधर देवीदास आमटे जिन्होंने अपना सारा जीवन कुष्ट रोगियों की सेवा और उनके पुनर्वास में लगा दिया गाँधीजी ने इस क्षेत्र में उनके अथक प्रयासों के लिए उन्हें अभय साधक कह कर पुकारा। इस अभय साधक बाबा आमटे ने कुष्ट रोग के बैक्टीरिया को चिकित्सीय प्रयोग के लिए अपने शरीर में प्रविष्ट करा लिया ताकि कुष्ट रोग पर उचित शोध कार्य करके शीघ्र इसके उपचार में सफल हो सकें। क्या अपने शरीर के साथ ऐसा प्रयोग कोई कायर कर सकता है?

किसी विशेष स्थिति में शरीर कैसे व्यवहार करता है यह देखने के लिए ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड में जन्मे तथा बाद में स्थायी रूप से भारत की नागरिकता ले लेने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक जे बी एस हॉल्डेन अपने शरीर के साथ विचित्र और भयंकर प्रयोग करने से भी नहीं घबराते थे। प्रयोग के बाद वे भयंकर पीड़ा की स्थिति में भी जो कुछ अनुभव करते थे उसे फौरन रिकॉर्ड कर लेते थे। उनके इस अपूर्व साहस के द्वारा ही कई रोगों के उपचार की खोज संभव हुई।

अपने ऊपर प्रयोग करके ही उन्होंने यह अध्ययन किया कि

कार्बन डाइऑक्साइड और बहुत ठंडे तापमान का साँस पर क्या प्रभाव होता है और इसके द्वारा ही उन्होंने टेटनस तथा कन्वलशन का उपचार खोजने में सफलता प्राप्त की। क्या वास्तविक बहादुरी के अभाव में इस प्रकार के प्रयोगों और परीक्षणों की कल्पना भी की जा सकती है?

बुद्ध, महावीर, नानक, महर्षि दयानन्द और कबीर से लेकर

गाँधी, और बाबा आमटे तक एक विस्तृत सूची हमारे सामने है महान् योद्धाओं की। और अब इस विस्तृत सूची में एक नाम और जोड़ना अत्यन्त प्रासंगिक ही होगा और वह नाम है विष्णु प्रभाकर का। विष्णु प्रभाकर और एक महान् योद्धा? विष्णु प्रभाकर का शुमार क्रान्तिकारी अथवा प्रगतिशील लेखकों में भी नहीं होता और न ही उन्होंने कभी कोई झंडा विशेष ही उठाया अथवा किसी आन्दोलन का ही नेतृत्व

"वास्तव में संसार को वही लोग ऊपर उठाते हैं तथा जीवन प्रदान करते हैं जो कोई ग्रन्थ लिखने की अपेक्षा अपना जीवनग्रन्थ पीछे छोड़ जाते हैं।"

किया। कुछ लोग तो उन्हें लेखक मानने को भी तैयार नहीं हुए फिर कैसे महान् योद्धा हुए विष्णु प्रभाकर? विष्णु प्रभाकर हिन्दी के एक प्रसिद्ध गाँधीवादी लेखक हुए हैं जिनका लेखन सदैव मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित रहा इसमें सन्देह नहीं। उनके जीवन और लेखन दोनों में अत्यन्त सादगी रही और यही सादगी उन्हें विशिष्ट बना देती है। लेकिन इससे कोई व्यक्ति महान् योद्धाओं की श्रेणी में कैसे आ सकता है? विष्णु प्रभाकर एक ऐसे लेखक हुए हैं जिन्होंने आम आदमी की पीड़ा को पहचानकर सही रास्ता सुझाया। जीवनपर्यन्त लोगों की मदद भी करते ही रहे। जितनी सादगी से जिये उतनी ही सादगी से चुपचाप चले भी गए लेकिन जाने से पहले वो काम कर गए जो बड़े-बड़े योद्धाओं के लिए भी असम्भव है।

मृत्यु के बाद भी हमें अपने शरीर से बेहद लगाव होता है। कई लोग तो जीते जी अपना श्राद्ध करने तथा अपनी मूर्तियाँ स्थापित करवाने से भी परहेज़ नहीं करते। पाश्चात्य देशों में अनेक लोग मृत्यु से पहले ही अपने कफ़न-दफ़न का चुनाव कर लेते हैं। अपनी देख-रेख में महंगी से महंगी डिज़ायनर शव-पेटिका बनवाकर रख लेते हैं। मृत्यु के बाद कुछ लोग शव का दाह-संस्कार करते हैं (जलाते हैं) तो कुछ उसे सुपुर्दे-ख़ाक कर देते हैं (ज़मीन में गाड़ते हैं) लेकिन पारसी लोग मृत शरीर को किसी ऐसे ऊँचे स्थान पर रख देते हैं जहाँ दूसरे जीव-जन्तु उसे खाकर अपनी भूख मिटा सकें।

मरने के बाद भी हमारा शरीर दूसरों के काम आ सके हमारे यहाँ तो यह भी कम क्रान्तिकारी विचार नहीं और इस प्रकार का निर्णय कोई बहादुर व्यक्ति ही ले सकता है। आज हमारे देश में न जाने कितने लोग दृष्टिदोष के कारण देख नहीं पाते। किसी के गुर्दे खराब हैं तो किसी के फेफड़े। अनेक लोग अस्थिदोषों से पीड़ित हैं। यदि हम मरने के बाद अपनी आँखों को दान में दे सकें तो असंख्य लोग जो देख नहीं पाते इस सुन्दर संसार को देखने में सक्षम हो सकेंगे, बिना किसी के सहारे के सामान्य जीवन जी सकेंगे।

विष्णु प्रभाकर की शवयात्रा नहीं निकली, अन्त्येष्टि पर साहित्यकारों की भीड़ जमा नहीं हुई क्योंकि उन्होंने अपना पूरा शरीर ही दान करने की घोषणा कर दी थी ताकि उनके पार्थिव शरीर से दूसरों को जीवनदान मिल सके। विष्णु प्रभाकर का आदर्श काल्पनिक आदर्श नहीं था। मन, वचन और कर्म तीनों से ही वे आदर्शवादी थे इसीलिए जाते-जाते जीवन के आदर्श को यथार्थ में बदल गए। उनका देहदान करने का संकल्प एक बार फिर हमें दधीचि ऋषि की याद दिला देता है। उन्होंने जाते-जाते जीवन के जो अक्षर लिखे वही अक्षर जीवन का वास्तविक सन्देश है तथा उन्हें महान् योद्धा बनाने के लिए पर्याप्त भी।

ए. डी. १०६-सी, पीतम पुरा,
दिल्ली- ११००३४

□□□

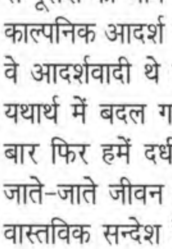
कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

जो करता है नेक काम और,
संघर्ष से नहीं घबराता है।
मंजलि उसको गले लगाती,
हर क्षण वह सुख पाता है।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

बन्धन और मोक्ष

संसार में हम एक सामान्य नियम देखते हैं कि यहाँ अच्छे काम करने वाले को सम्मानित किया जाता है और बुरे काम करने वालों को दण्डित किया जाता है। मनुष्य जीवन में आत्मा यदि अच्छे काम करती है तो परमात्मा की ओर से उसको उसके अच्छे कर्मों के फल के रूप में सुख प्रदान किये जाते हैं और जो मनुष्य बुरे व दूसरों को अकारण पीड़ा आदि पहुँचाते हैं उनको दुःख मिलता है। कर्म-फल सिद्धान्त पर विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि यदि कोई मनुष्य अपने पुराने सभी बुरे कर्मों का फल भोग ले और उसके बाद कोई बुरा कर्म न करे तो ऐसे मनुष्य को किंचित भी दुःख प्राप्त नहीं होना चाहिये। ऐसे मनुष्य को ईश्वर की व्यवस्था से सुख ही सुख प्राप्त होगा। अब यदि ऐसे मनुष्य की मृत्यु होती है तो उस मनुष्य को श्रेष्ठ मनुष्य जन्म ही मिलेगा जिसमें उसे जन्म के आरम्भ से मृत्यु पर्यन्त सुख ही सुख मिलेंगे। इस नये जन्म में भी यदि वही सभी उत्तम कर्मों को करता है यथा वेदाध्ययन, वेदानुसार आचरण, ईश्वरोपासन, यज्ञादि कर्म सहित परोपकार और दान आदि कार्य करता है, ईश्वरोपासना करते हुए वह ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है तो अब उसकी और अधिक उन्नति होनी चाहिये व होती है। इसका उत्तर यह मिलता है कि ऐसी अवस्था में उस जीवात्मा वा मनुष्य का मोक्ष वा मुक्ति हो जाती है। जिस जीवात्मा को मोक्ष मिलता है उसको बहुत लम्बी अवधि के लिए जन्म व मृत्यु से अवकाश मिल जाता है। मोक्ष ऐसी अवस्था होती है जिसमें मुक्त जीव को सुख व आनन्द ही होता है। जीवात्मा की ऐसी कोई उचित कामना नहीं होती जिसकी पूर्ति वा प्राप्ति मोक्षावस्था में नहीं होती। यह मोक्ष की प्राप्ति ही प्रत्येक जीवात्मा का लक्ष्य है। जीवात्मा अनादि, अनुत्पन्न, नित्य व अमर है। इस कारण सभी जीवात्माओं के पूर्व में असंख्य व अनन्त जन्म हो चुके हैं और अनन्त बार ही उनकी मृत्यु भी हुई है।

संसार में वा ईश्वर के ज्ञान में जितनी भी योनियाँ हैं, उन सबमें जीवात्मा कई-कई बार जन्म ले चुका है और कई बार वह मोक्ष भी प्राप्त कर चुका है। अन्तिम बार मोक्ष की प्राप्ति होने पर जब उसका जन्म हुआ तो वह किन्हीं कारणों से अविद्या में कुछ फंस गया जिससे उसका पुनर्जन्म हुआ और ऐसा होते हुए हमारी व हम सबकी इस जन्म की वर्तमान स्थिति प्राप्त हुई है। हम सबके लिए वेद व उनका ज्ञान सुलभ है। मोक्ष की प्राप्ति के साधन भी हमें सत्यार्थप्रकाश व दर्शन आदि ग्रन्थों के अध्ययन से ज्ञात हो जाते हैं। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सब मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हों जिससे हमारा मनुष्य जीवन सफलता को प्राप्त हो सके।

वेदों के मर्मज्ञ ऋषि दयानन्द विद्या से मोक्ष और अविद्या से बन्ध व जन्म-मरण मानते हैं। इसका विवेचन उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में किया है। उनके अनुसार जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है, वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। अविद्या के लक्षण बताते हुए वह कहते हैं कि जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत् देखा, सुना जाता है

सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। अशुचि, अर्थात् मलमय स्त्र्यादि के शरीर और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र कर्मों में पवित्र बुद्धि, दूसरा अत्यन्त विषयसेवनरूप दुःख में सुखबुद्धि आदि तीसरा अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग

है। यह चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या कहाती है। इसके विपरीत अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्र, दुःख में दुःख, सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है। **जिससे पदार्थों का यथार्थस्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिससे तवस्वरूप न जान पड़े, अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहलाती है**। अर्थात् कर्म और उपासना अविद्या इसलिये हैं कि यह बाह्य और अन्तर क्रिया विशेष नाम हैं, ज्ञान विशेष नहीं। इसीलिए वेद में कहा गया है कि बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुःख से पार कोई नहीं होता। अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्याभाषणादि कर्म पाषाणमूर्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध होता है। ऋषि के विवेचन से यह भली प्रकार विदित हो जाता है कि अविद्या से बन्ध वा जन्म-मरण तथा विद्या से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

महर्षि दयानन्द यह भी बताते हैं कि मुक्ति उनको प्राप्त होती है जो जन्म-मरण के बन्धन में फंसा होता है। बद्ध वह है जो अधर्म अज्ञान में फंसा हुआ जीव है। बन्धन व मोक्ष स्वभाव से नहीं अपितु निमित्त से होता है। यदि बन्धन व मोक्ष स्वभाव से होता तो बन्ध जीव सदैव बन्धन में ही रहता और मुक्त जीव सदैव मुक्त ही रहता। बन्ध जीव की मुक्ति न होती और मुक्त जीव फिर बन्धन को प्राप्त न होता।

मोक्ष क्या है? जिस से छूट जाना हो उसको मुक्ति वा मोक्ष कहते हैं। सभी मनुष्य दुःखों से छूट जाना चाहते हैं इसलिये दुःखों से छूट कर सुखों को प्राप्त करना ही मुक्ति कहलाती है। दुःखों से छूट कर जीवात्मा आनन्दस्वरूप सर्वव्यापक ब्रह्म में रहता है। प्रश्न है कि मुक्ति किन कर्मों के करने से होती है? इसका उत्तर है कि परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, वैदिक रीति से परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने, पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सब से उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्यायधर्मानुसार ही करें। इन साधनों से मुक्ति होती है। इन साधनों के विपरीत ईश्वर आज्ञा के भंग करने आदि कामों से जीवात्मा बन्धन अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में फंस कर दुःख और सुख दोनों प्राप्त कर बार-बार जन्म व मृत्यु को प्राप्त होती रहती है।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि मुक्ति में जीव का ईश्वर में लय हो जाता है या उसकी पृथक् सत्ता बनी रहती है? इसका उत्तर यह है कि जीव का पृथक् अस्तित्व बना रहता है। उसका ईश्वर में न तो लय होता है और न ही जीव नष्ट व विनाश को प्राप्त होता है। जीव मुक्ति की अवस्था में ब्रह्म में व उसके सान्निध्य में रहता है। ऋषि दयानन्द बताते हैं कि

मोक्ष में भौतिक शरीर वा इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ नहीं रहते, किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते हैं। जब सुनना चाहता है तब श्रोत्र, स्पर्श करना चाहता है तब त्वचा, देखने के संकल्प से चक्षु, स्वाद के अर्थ रसना, गन्ध के लिये घ्राण, संकल्प-विकल्प करते समय मन, निश्चय करने के लिये बुद्धि, स्मरण करने के लिये चित्त और अहंकार के अर्थ अहंकाररूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है और संकल्पमात्र शरीर होता है। जैसे शरीर के आधार रह कर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है, वैसे मुक्ति में जीव की शक्ति मुख्य एक प्रकार की होती है। परन्तु

बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, भीषण, विवेचन, क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, संयोग, विभाग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन और गन्ध ग्रहण तथा ज्ञान इन २४ चौबीस प्रकार के सामर्थ्ययुक्त जीव है। इससे मुक्ति में भी आनन्द की प्राप्ति भोग करता है। मोक्ष की अवस्था में जीवात्मा कितनी अवधि तक रहता है? मुक्त जीव की यह अवधि ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष होती है। इसे महाकल्प व ब्रह्मा के १०० वर्ष भी कहते हैं। इसके बाद मुक्ति की अवधि समाप्त हो जाती है और जीवात्मा फिर मनुष्य योनि में जन्म लेता है। इसके बाद पुनः शुभाशुभ कर्मों के अनुसार उसका बन्ध व मोक्ष होता है।

ऋषि दयानन्द ने मुक्ति के साधनों का विस्तार से वर्णन भी सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में किया है। जो बन्धु मुक्ति के विषय में विस्तार से जानना चाहते हैं उनको सत्यार्थप्रकाश का नवम समुल्लास पढ़ना चाहिये। हमने इस लेख में स्वामी दयानन्द जी के मोक्ष विषयक कुछ मन्तव्यों को प्रस्तुत किया है। हम आशा करते हैं कि पाठकों को इससे कुछ लाभ होगा।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चुक्खूवाला- २, देहरादून- २४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

□□□

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १७ पर देखें।

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

नवलखा महल अपने आप में अद्वितीय संग्रहालय है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। मेरा विचार है जो तमाम भ्रान्तियाँ समाज में व्याप्त हैं उसको बदलने के लिये केवल आर्यसमाज संस्था ही बहुत बड़ा कार्य कर रही है। मैं अपनी ओर से आर्यसमाज को एवं आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

- एच.के. निगम, चलभाष- ६३००११५४६८

महर्षि दयानन्द जी की आर्ट गैलेरी को देखने के बाद हमें बहुत ही सुखद अनुभूति हुई। इनके जीवन में शुरूआत से लेकर अन्त तक जो कठिनाईयाँ और मुश्किलें इन्होंने देखी है, वैसा आज का मानव नहीं देख सकता। मुझे इनके जीवन से बहुत अच्छी शिक्षा मिली व सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने की इच्छा जागृत हुई। बहुत-बहुत धन्यवाद व आभार आप सभी आर्ट गैलेरी बनाने वालों का जो आपने ऐसे ऐतिहासिक तथ्यों को सम्भाल कर रख रखा है।

- जगदीश जगत बुलीवाल, गंगापुर, भीलवाड़ा (राज.)

फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी

प्रो. शामलाल कौशल

यह एक आम बात है कि कोई हमारी प्रशंसा करे या ना करे लेकिन हम अपने मुँह से मिया मिट्ठू बने बिना बाज नहीं आते। जैसे भारत दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है। हम घर आये मेहमान को भगवान समझते हैं। खुद भूखे रहकर भी पड़ोसी के भूखे बच्चे को पेटभर खाना खिलाते हैं, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आदि। हम जानते हैं कि आजकल इन बातों में कोई दम नहीं। लेकिन इसके बावजूद भी हम लकीर के फकीर बने हुए हैं। आखिरकार हम श्रीराम, युधिष्ठर, महात्मा गाँधी के महान् भारत के निवासी हैं। हमारा दिल बहुत नर्म है। हमें परमात्मा पर बहुत भरोसा है। कोई हमारा कुछ भी क्यों नहीं बिगाड़ जाये, हम बहुत जल्दी उसे भूलकर उसे गले लगा लेते हैं। हमारा दिल खालिस हिन्दुस्तानी है। इसमें मिलावट हो नहीं सकती। इतिहास गवाह है कि मुहम्मद गजनवी लूटमार करता हुआ जब सोमनाथ के मंदिर तक जा पहुँचा उसने हजारों मासूम भारतीयों को मौत के घाट उतार दिया, हमने उसका बिल्कुल विरोध नहीं किया क्योंकि हमें भरोसा था कि भगवान हमारी रक्षा करने जरूर आयेंगे। क्योंकि गीता से हमने सीख रखा है कि जब धर्म की ग्लानि होती है परमात्मा धर्मात्मा लोगों की रक्षा के लिए तथा पापियों के नाश करने के लिए अवतार लेता है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उस समय अगर प्रत्येक भारतीय एक-एक पत्थर उठाकर गजनवी की सेना पर फेंकता तो ना केवल सोमनाथ का मंदिर लुट जाने से बच जाता बल्कि आगे कोई विदेशी आक्रमणकारी भारत की तरफ मुँह करने की हिम्मत भी नहीं करता लेकिन हमने ऐसा नहीं किया क्योंकि यह हमारे हिन्दुस्तानी दिल की फितरत के मुताबिक है ही नहीं।

अगर हम इतिहास से कुछ ना भी सीखें तो भी आजादी के बाद जो हमारी आये दिन दुर्गति हो रही है उसके लिए भी हमारा हिन्दुस्तानी दिल बधाई का पात्र है जो कि किसी तरह से पसीजता भी नहीं। पाकिस्तान का निर्माण भारत माता के विभाजन के बाद हुआ। इधर से उधर तथा उधर से इधर आने जाने में करोड़ों शरणार्थियों का कत्लेआम हुआ, बहू बेटियों की इज्जत आबरू के साथ खिलवाड़ हुआ, करोड़ों रुपये की सम्पत्ति बरबाद हुई पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला करके उसके एक हिस्से पर कब्जा कर लिया। लेकिन उसके बदले में हमें क्या मिला पाकिस्तान की ईर्ष्या, शत्रुता तथा विरोध। हमने हर बार उसके हितों के लिए कुछ ना कुछ किया लेकिन उसने भारत में तोड़फोड़ करने के लिए अपने यहाँ आतंकवादियों को प्रशिक्षण देकर भेजने का सिलसिला जारी रखा। बेशक इससे उसका अपना भी सत्यानाश हो गया। पाकिस्तान द्वारा प्रशिक्षित आतंकवादियों ने मुम्बई में

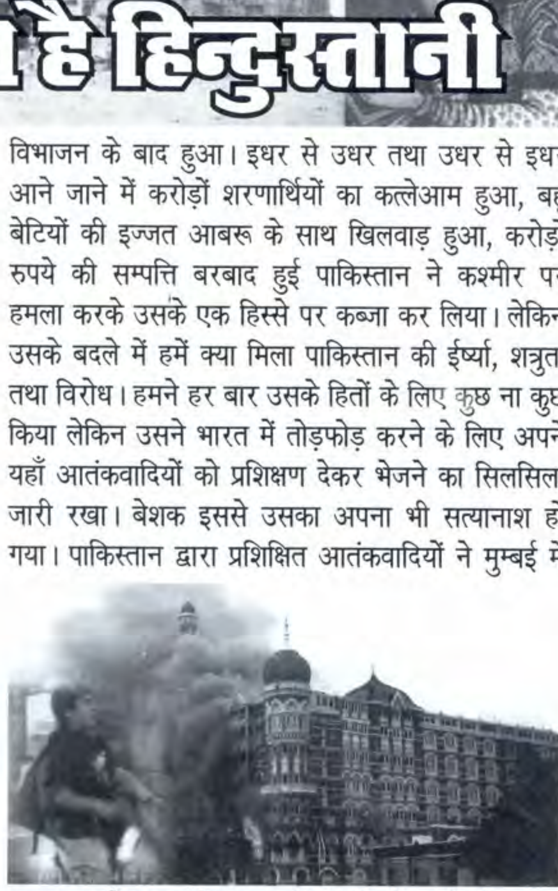

हमला करके १५० से ज्यादा लोगों को मौत की नींद सुला दिया। एक जीवित आतंकवादी अजमल कसाब को हम तो अति सुरक्षित जेल में रखकर उसको बिरयानी खिलाते रहे तथा उसकी सेहत का ध्यान रखते रहे जबकि दूसरी तरफ पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर में हमारी सीमा पार करके हमारे दो सैनिकों के सिर काट कर ले गए तथा एक भारतीय कैदी सरबजीत सिंह को बम धमाकों के झूठे केस में फंसाकर उसे लाहौर की लखपतराय जेल में यातनाएँ देते रहे तथा उसी जेल में दो कैदियों ने सरबजीत सिंह पर घातक हमला किया और उसकी मृत्यु हो गई। जबकि हमने उम्रकैद काट रहे एक पाकिस्तानी कैदी चिश्ती को रिहा करके सादर पाकिस्तान भेज दिया। पाकिस्तान भारतीय कैदियों पर जुल्म ढाह रहा है

और हम मानवाधिकार के नियमों के अनुसार उसका बाल भी बांका नहीं होने दे रहे क्योंकि हमारा हिन्दुस्तानी दिल जैसे को तैसा करने की अनुमति नहीं दे रहा।

इटली के एक जहाज के दो रक्षकों ने हमारे दो मछुआरों को मार गिराया। कुछ दिन तक वह हमारी जेल में रहे फिर इटली के दूत द्वारा आश्वासन दिए जाने के बाद वे अपने देश में होने वाले चुनावों में मतदान करने के लिए चले गए और वापस आने से ही इंकार कर दिया। आखिरकार हमारी सरकार ने इटली सरकार को इस बात के लिए मना लिया कि इन दोनों अपराधियों को वापस भारत भेज दीजिए और उन्हें किसी भी दशा में फांसी नहीं दी जायेगी। दुनिया में शायद

भारत एकमात्र ऐसा देश होगा जो कि मुकदमा चलने से पहले हत्यारों को अभयदान देता हो। क्या ऐसा हिन्दुस्तानी दिल कहीं और मिलेगा?

हमने चीन के साथ अच्छे पड़ोसी वाले सम्बन्ध बनाने की कोशिश की। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने चीन के साथ पंचशील सिद्धान्त पर हस्ताक्षर किए तथा हिन्दी चीनी भाई-भाई को बढ़ावा दिया। लेकिन उसका जवाब चीन ने १९६२ में भारत पर आक्रमण करके तथा हमारी ६० हजार कि.मी. जमीन पर कब्जा करके दिया। वह जम्मू कश्मीर को विवादित क्षेत्र मानकर अपने यहाँ आने के लिए एक नत्थी वीजा देता है। अरुणाचल प्रदेश को अपना इलाका मानता है, ब्रह्मपुत्र नदी पर बाँध बनवाकर भारत में आने वाले जल को रोकता है, लद्दाख में १६ कि.मी. तक प्रवेश कर अपनी चौकियाँ बनाता है, पाकिस्तान के साथ मिलकर हमें परेशान करता है फिर भी हम उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करके उनके साथ खूब व्यापार बढ़ा रहे हैं क्योंकि हमारा हिन्दुस्तानी दिल शान्तिप्रिय है।

हम अमेरिका तथा इंग्लैण्ड को अपने अच्छे मित्र देश समझने लगे हैं। लेकिन जब कभी हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्रसिद्ध अभिनेता शाहरूख खान तथा उत्तर प्रदेश के मंत्री रहे आजम खान को अमेरिका जाना पड़ा, सुरक्षा के नाम पर इनके तथा अन्य भारतीयों के कपड़े उतरवाकर तलाशी लेते रहे। यही कुछ इंग्लैण्ड ने भी हमारे साथ किया लेकिन जब कभी भी अमेरिका इंग्लैण्ड या किसी अन्य देश का कोई मेहमान आता है तो 'अतिथि देवो भव:' मानकर हम दिल के दरवाजे खोलकर उसका स्वागत करते हैं। तलाशी का सवाल ही नहीं। कभी श्रीलंका तथा कभी मालदीव हमें आँखें दिखा जाते हैं और हम शालीनता दिखाते हैं। वह भी हमारी दरियादिली है। इस प्रकार के हमारे हिन्दुस्तानी दिल की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जरूर प्रशंसा होनी चाहिए।

- मकान नं. ९७५-बी/२०, राजीव निवास, शक्ति नगर,
ग्रीन रोड, रोहतक (हरि.) १२४००१

□□□

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

दर्शन के अनुसार सिद्धियों का यथार्थ स्वरूप

आज संसार में अनेक मत, पंथ, सम्प्रदायों के सन्त महात्मा योगी तथा धर्मावलम्बियों की मान्यता है कि ईश्वर चमत्कार करता है तथा ईश्वर को मानने वाले भक्त भी अनेक प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करके चमत्कार करते हैं। परन्तु बिना कर्म के केवल सिद्धियाँ प्राप्त नहीं होतीं। लोग मानते हैं कि असंभव को संभव करना, मृत जीव को पुनः जीवित करना आदि सभी बातें सिद्धान्त के विपरीत और असत्य हैं।

प्रश्न- सिद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर- योग का अभ्यास करने से आत्मा, शरीर, मन और इन्द्रियों में विशेष परिवर्तन हो जाते हैं उन्हीं को सिद्धि कहते हैं।

प्रश्न-सिद्धि के कितने भेद हैं?

उत्तर- योग दर्शन के अनुसार सिद्धियाँ पाँच प्रकार की होती हैं।

जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धयः। - योग. कैवल्यपाद ४/१

जन्म सिद्धि, औषधि सिद्धि, मंत्र सिद्धि, तप सिद्धि और समाधि सिद्धि।

क. जन्म सिद्धि- वर्तमान जन्म में जो जाति, आयु और भोग तथा शरीर, इन्द्रिय और मन की प्राप्ति होती है, वह पूर्वजन्म में किए गए कर्म के आधार पर ही होती है। वे ही वर्तमान जन्म के कारण बनते हैं और यदि किसी ने पूर्वजन्म में योग के अंगों का अनुष्ठान ठीक ढंग से किया हो तो उसके संस्कार चित्त में बन जाते हैं उन संस्कारों के आधार पर इस जन्म में शीघ्र ही योगाभ्यास से उन्नति हो जाती है।

वैसे ही पूर्वजन्म में किसी ने अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके अच्छी विद्या प्राप्त की हो तो विद्या के संस्कार चित्त में बन जाते हैं। और उन संस्कारों के कारण इस जन्म में शीघ्र ही वह मनुष्य पढ़ लिखकर विद्वान् बन जाता है। चूँकि ये सब सिद्धियाँ पूर्वजन्म के आधार पर प्राप्त हुईं इसलिए इनको जन्मसिद्धि कहते हैं।

ख. औषधि सिद्धि- अनेक प्रकार के अन्न तथा जड़ी बूटियों को औषधि शब्द से ग्रहण करना चाहिए। अन्नों के द्वारा शरीर और इन्द्रियों में परिवर्तन तथा शरीरादि का विकसित होना प्रसिद्ध ही है। अन्न के बिना तो शरीर की सत्ता असंभव है और शरीर नहीं तो मन और आत्मा भी उन्नत नहीं हो पायेगी। जड़ी बूटियों के द्वारा शरीरस्थ रोग दूर हो जाते हैं और शरीर पूर्णरूपेण स्वस्थ हो जाता है जिसे कायाकल्प भी कहते हैं। शरीर और इन्द्रियों के स्वस्थ होते ही मन और आत्मा भी बहुत कुछ प्रभावित होते हैं। इसी को औषधि सिद्धि कहते हैं।

ग. मन्त्र सिद्धि- गायत्री मंत्र आदि वेद मंत्रों के पाठ तथा उनके अर्थ चिन्तन से मन, वाणी और आत्मा में पवित्रता आती है। जिस प्रकार से किसी गलत वाक्य या अपशब्द को बोलने से मन, वाणी अपवित्र तथा मन बिल्कुल अशान्त हो जाता है तथा मनुष्य पतन की ओर चला जाता है वैसे ही अच्छे शब्दों, वाक्यों तथा मंत्रों का उच्चारण करने से बोलने तथा सुनने वाले इन दोनों की आत्मा, मन व वाणी पवित्र तथा मन बिल्कुल शान्त हो जाता है और आनन्द की अनुभूति होती है। मनुष्य उन्नति की ओर जाता है। इसी को मन्त्र सिद्धि कहते हैं।

घ. तप सिद्धि- यम, नियम आदि योग के अंगों का अनुष्ठान करते हुए जो सर्दी-जुकाम, भूख-प्यास आदि को सहन किया जाता है उसी को तप कहते हैं। जो योगाभ्यासी सर्दी-जुकाम, गर्मी, भूख-प्यास, हानि-लाभ, मान-अपमान, जय-पराजय

आदि को सहन नहीं करता वह अहिंसा आदि व्रतों के पालन में समर्थ हो नहीं सकता। तप के द्वारा शरीर, मन, इन्द्रियाँ तो सुदृढ़ मजबूत और समर्थ होती ही हैं साथ ही साथ विद्या प्राप्ति रूप तप अनुष्ठान करने से ज्ञान की वृद्धि होकर अज्ञान नष्ट हो जाता है जिससे आत्मा भी पवित्र हो जाती है, क्योंकि अज्ञान ही आत्मा की अपवित्रता का तथा ज्ञान पवित्रता का कारण है।

ङ. समाधि सिद्धि– योग के आठों अंगों का अनुष्ठान करने से चित्तवृत्ति का निरोध होकर समाधि की प्राप्ति हो जाती है उस समाधि से योगी को अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। समाधि से प्राप्त होने वाली सिद्धियों का उल्लेख योगशास्त्र के तृतीय पाद (विभूति पाद) में कर दिया गया है जैसे कि समाधि के द्वारा योगी ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है तथा समाधि का बार-बार अभ्यास करके चित्त में रहने वाले सभी बुरे संस्कारों को दग्धबीज कर देता है और मोक्ष प्राप्ति की योग्यता प्राप्त कर लेता है। **मोक्ष को प्राप्त कर लेना ही योगी के लिए सबसे बड़ी सिद्धि है।**

प्रश्न– क्या कुछ ऐसी भी बातें हैं जो असंभव होते हुए भी योगी के साथ जोड़ दी जाती है?

उत्तर– हाँ! कुछ ऐसी बातें हैं जो कि असंभव होते हुए भी योगी के साथ जोड़ दी जाती हैं। योगी भूतों तथा उनसे उत्पन्न शरीर तथा भोजन, वस्त्र, आवास आदि में कभी भी आसक्त नहीं होता है। अर्थात् वह भूतों तथा इन्द्रियों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेता है। उसी प्रकार योगदर्शन के द्वितीय पाद 'साधनपाद' में भी यम नियमों के पालन से उत्पन्न होने वाली सिद्धियों का उल्लेख है। जैसे कि– **'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः॥'** अर्थात् जो योगी पूर्णरूपेण अहिंसा का व्रत पालन कर लेता है उसके सम्पर्क में आकर उपदेश सुनने वाले तथा स्वयं योगी भी पूर्णरूपेण राग-द्वेष से रहित हो जाता है। **'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्॥' जो योगी मन, वाणी और शरीर से सर्वथा सत्य मानता, जानता, कहता तथा आचरण करता है वह जिस किसी संभव कार्य को करता है उसमें शीघ्र ही सफलता मिल जाती है।**

'अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्॥' - योग. साधनपाद सूत्र ३७

अर्थात् मन वाणी और शरीर तीनों प्रकार से चोरी का त्याग कर देने पर योगी को सभी आवश्यक उत्तम पदार्थों की प्राप्ति हो जाती है।

'ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः॥' - योग. साधनपाद सूत्र ३८

अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करने से शरीर, मन वाणी तथा इन्द्रियों का बल बढ़ जाता है।

'अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्ता सम्बोधः॥' - योग. साधनपाद सूत्र ३७

अर्थात् अपरिग्रह के पालन से मैं कौन हूँ? यह शरीर क्या है? आत्मा क्या? इत्यादि बातों की जानकारी प्राप्त हो जाती है। उपर्युक्त ये सिद्धियाँ ऐसी हैं जो कि सम्भव हैं और योगी को प्राप्त होती हैं। योगी बिना अन्न, जल, वायु आदि का सेवन किए जीवित रह जाता है, ये बातें गलत हैं। उसी प्रकार से योगी का अग्नि के ऊपर भूमि के समान चलना, अपने शरीर को छोटा-बड़ा करना, आकाश में उड़ना, लाखों वर्षों तक जीवित रहना, जादूगरों की तरह फूल मिठाई आदि वस्तुओं को बना लेना इत्यादि जितनी भी असम्भव बातें हैं ये सब कपोल कल्पित हैं इनका योग से कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः ये सब गलत हैं ये सिद्धियाँ नहीं तथा इन कार्यों को योगी नहीं करता। **{इस लेख में प्रस्तुत विचार लेखक के हैं, सम्पादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।}**

आचार्य विश्वामित्रार्य मुमुक्षुः
महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना

❑❑❑

प्रिय आर्य बन्धुओं व बहिनों,

सादर नमस्ते!

आपको ज्ञात ही होगा कि राजस्थान प्रान्त का उदयपुर नगर एक अति मनोरम नगर है। यहीं पर स्थित 'नवलखा महल' कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचनास्थली है। 1992 में यह आर्यसमाज को हस्तगत हुआ था तब से अब तक प्रभु कृपा से, भगीरथ पुरुषार्थ तथा आप लोगों के स्नेह से यह एक सुन्दर स्मारक बन चुका है। जिसके दर्शनार्थ लगभग **30000** (तीस हजार) पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष आयोज्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव भी आर्य जगत में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

21 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव दिनांक 6 अक्टूबर से 8 अक्टूबर 2018 तक आयोज्य है।

इसी में पधारने हेतु यह अग्रिम अनुरोध है।
मानस बनावें इष्टमित्रों, परिवारीजनों के साथ आने का।
पर्यटन तथा धर्मलाभ साथ-साथ हो जाएगा।
इस निवेदन को आए Acknowledge भी करेंगे तो प्रसन्नता होगी।

निवेदक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर- 313001
दूरभाष- 0294-2417694, 7229948860, 9314235101

युद्ध हेतु सन्नद्ध एक सैनिक की स्थिति-ऋग्वेद

शिवनारायण उपाध्याय

स्वामी दयानन्द के कथनानुसार वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सब विद्याओं में युद्ध विद्या भी महत्वपूर्ण है। इसलिये ऋग्वेद और अथर्ववेद में उसका विस्तृत वर्णन हुआ है। इस लेख में ऋग्वेद के आधार पर हम यह प्रदर्शित करना चाहेंगे कि युद्ध में जाने के लिए प्राचीन काल में सैनिक को किस प्रकार तैयार होना पड़ता था। ऋग्वेद मण्डल ६ के सूक्त ७५ में इस विषय का वर्णन इस प्रकार है- युद्ध में जाने से पूर्व सैनिक अपने शरीर पर कवच धारण करता है। इस सूक्त का ऋषि पायुर्भारद्वाज तथा देवता वर्म (कवच) है-

जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे।
अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु।।

- ऋ. ६/७५/१

अर्थ- (यत्) अब (समदाम्) संग्रामों के (उपस्थे) उपस्थित होने पर एक योद्धा (वर्मी) कवच वाला होकर, कवच को धारण करके (यति) रणांगन में गति करता है तो इसका (प्रतीकम्) रूप (जीमूतस्य इव) जलों से परिपूर्ण मेघों के समान (भवति) होता है। लोहे से बना हुआ कवच योद्धा को बिल्कुल बादल के समान बना देता है।

हे सैनिक! (त्वम्) तू (अनाविद्धया) शत्रुओं के बाणों से न बिंधे हुए (तन्वा) शरीर से युक्त हुआ (जय) विजय को प्राप्त कर (त्वा) तुझे (सः) वह (वर्मणः महिमा) कवच की महिमा (पालित) करे।

भावार्थ- युद्ध में जाने से पूर्व सैनिक अपने शरीर पर कवच धारण करता है। कवच के धारण करने से उसका शरीर शत्रु के बाणों से बच जाता है। कवच के धारण करने से वह बादल के समान दिखाई देता है। सैनिक में उत्साह आ जाता है जो उसे शत्रु पर विजय प्राप्त करने को प्रेरित करता है।

सैनिक द्वारा कवच धारण करने के बाद शस्त्र के रूप में वह धनुष को ग्रहण करता है।

धन्वना गा धन्वनाजिं ज्येम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम।

- ऋ. ६/७५/२

अर्थ- (धन्वना) धनुष के द्वारा, युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा (गाः) हम शत्रु द्वारा चुराई गई गौवों को, अपनी भूमि को फिर से जीतने वाले बनें। (धन्वाना) इस धनुष से (आजिम्) संग्राम को (जयेम) जीतें। (धन्वना) इस धनुष से ही (तीव्राः) बड़े उद्धत स्वभाव वाले (शत्रोः) शत्रु की (अपकामं कृणोति) विजय की कामना को विनष्ट किया जाता है।

भावार्थ- श्रेष्ठ हथियारों का उपयोग ही हमें विजय दिलाता है हमारे पास जो भी अस्त्र-शस्त्र हों वह व्यवहार योग्य हों जैसे हमारे पास धनुष है तो बाण आदि भी होने चाहिए। बन्दूक है तो गोलियाँ भी होनी चाहिए।

वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाना।
योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयं समने पारयन्ती।।

- ऋ. ६/७५/३

अर्थ- (प्रियं सखायम्) अपने मित्र सखा (पति) को (परिषस्वजाता) आलिङ्गन करती हुई (योषा इव) पत्नी के समान, इषु का आलिङ्गन करती हुई (इयं ज्या) यह डोरी (वक्ष्यन्ती इव) कुछ कहना सा चाहती हुई (कर्ण आगनीगन्ति) कान के समीप आती है। (अधि धन्वन्) धनुष पर विता फैली हुई (समने पारयन्ती) युद्ध में पार को प्राप्त करती हुई यह (ज्याः शिक्ते) अव्यक्त ध्वनि करती है।

भावार्थ- ऋग्वेद में उपमा अलङ्कार का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। इस ऋचा में भी उपमा अलङ्कार का प्रयोग हुआ है। कहा गया है कि धनुष से तीर चलाते समय धनुष की डोरी इस प्रकार धनुषधारी के कान पास आ जाती है जैसे कि

अपने प्रिय पति को आलिङ्गन करती हुई पत्नी पति के कान के पास आकर कुछ कहती है।

ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे।
अप शत्रून्विध्यतां संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥

- ऋ. ६/७५/४

अर्थ- (ते) वे (आर्त्नि) धनुषकोटियाँ (समना योषा इव) समान मनवाली (समन स्का) स्त्री की तरह (आचरन्ती) आचरण करती हुईं, जैसे वह स्त्री पति के सानिध्य को नहीं छोड़ती, उसी प्रकार धनुष के सान्निध्य को न छोड़ती हुईं ये धनुषकोटियाँ (बिभृताम्) सैनिक का धारण करती हैं। (इमे) ये (संविदाने) परस्पर संज्ञान वाली होती हुईं, विसंवाद रहित होती हुईं धनुषकोटियाँ (अमित्रान्) शत्रुओं को (विष्फुरन्ती) हिंसित करती हुई (शत्रून्) शत्रुओं को (अपविध्यताम्) विद्ध करके दूर भगा दें।

भावार्थ- इस ऋचा में उपमा अलङ्कार है। ये धनुषकोटियाँ समान मनवाली स्त्री की तरह आचरण करती हुईं जैसे वह स्त्री पति के सान्निध्य को नहीं छोड़ती, उसी प्रकार धनुष के सान्निध्य को न छोड़ती हुई ये धनुषकोटियाँ, माता जैसे बच्चे को गोद में धारण करती है, उसी प्रकार सैनिक को धारण करती हैं।

फिर योद्धा का एक तीर से तो काम चलता नहीं है उसके पास तरकस होना चाहिए और उसमें अनेक तीर होने चाहिए। अगली ऋचा में इसका वर्णन हुआ है। फिर यदि सैनिक रथी है तो उसके पास रथ और सारथि भी होना चाहिये।

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः॥

- ऋ. ६/७५/६

(रथे तिष्ठन्) रथ पर स्थित हुआ (सुषारथि) उत्तम सारथि (यत्र यत्र कामयते) जहाँ-जहाँ चाहता है वहाँ-वहाँ (वाजिनः) घोड़ों को (पुरः नयति) आगे ले जाता है। सारथि भी बिना लगाम लगाये घोड़ों पर नियंत्रण नहीं रख सकता है, इसलिये कहते हैं कि (अभी शूनाम्) रश्मियों की, लगाम की (महिमानम्) महिमा की (पनायत) स्तुति करो। ये (रश्मय) लगामें ही (मनः पश्चात्) मन के अनुकूल होती हुईं, सारथि के मन के अनुसार (अनुयच्छन्ति) घोड़ों को नियंत्रण में रखती हैं।

भावार्थ- रथी के रथ चलाने के लिए एक कुशल सारथि की आवश्यकता होती है। सारथि ही रथ को जहाँ आवश्यकता हो ले जाता है। घोड़ों पर नियंत्रण के लिए उनके लगाम लगाने की आवश्यकता होती है। लगाम के बिना घोड़ों पर नियंत्रण नहीं रखा जा सकता है।

अगली ऋचा में रथ में क्या हो? इसका वर्णन है।

रथवाहनं हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म।
तत्रा रथमुप शग्मं सदेम विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः॥

- ऋ. ६/७५/८

अर्थ- (यत्र) जहाँ रथ में (अस्य) इस सैनिक के (रथवाहनम्) रथ को संचालित करने वाले उपकरण (हविः) अन्न और (नाम आशुधं) शत्रुओं को नमाने वाले अस्त्र (निहितम्) रखे जाते हैं और (अस्य) इस योद्धा का (वर्म निहितम्) कवच रखा है (तत्र) वहाँ (वयम्) हम (विश्वा हा) सदैव (सुमनस्यमानाः) उत्तम मन वाले होते हुये (शग्मं रथम्) सुख कर रथ में (उपसदेम) आसीन हों।

भावार्थ- रथ में युद्ध के सब उपकरण रखे हों। उनमें आवश्यक भोजन सामग्री आयुध कवच आदि रखे हों। फिर रथ के साथ रथ के रक्षक भी चलते हैं। ये अस्त्र-शस्त्र सन्नद्ध सैनिकों के द्वारा शत्रु समूह को अभिभूत करके राष्ट्र रथ के गोपा (रक्षक) कहलाते हैं। अगली ऋचा में उनका वर्णन हुआ है।

युद्ध के समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि सभी मिलकर राष्ट्र रक्षा के कार्यों में संलग्न हो जाते हैं।

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा।
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रथा माकिर्नो अघशंस ईशत॥

- ऋ. ६/७५/१०

अर्थ- हमारे राष्ट्र के (ब्राह्मणासः) ज्ञान को प्रधानता देने वाले ब्राह्मण लोग तथा (पितरः) राष्ट्र रक्षक क्षत्रियवर्ण (सोम्यासः) सोम का सम्पादन करने वाले हों। ऐसा होने पर (अने हसा) निष्पाप से (द्यावापृथिवी) द्युलोक और पृथ्वीलोक (नः शिवे) हमारे लिये कल्याणकारक हों। ब्राह्मण और क्षत्रिय के ठीक होने पर राष्ट्र में पाप नहीं फैलते। इस राष्ट्र में (पूषा) पोषण करने वाले वैश्य वर्ग (ऋतावृधः नः) ऋत का, यज्ञ का वर्णन करने वाले हम लोगों को (दुरितात् पातु) दुर्गति से बचायें। अन्नाभाव के कारण राष्ट्र में भुखमरी ही न फैल जाये। वैश्य वर्ग कृषि, गोरक्षा तथा वाणिज्य द्वारा सदा सुकाल बनाये रखें और यज्ञों का वर्धन करें। प्रभु आप हमारा (रक्षा) रक्षण करिये। (अधशंसः) बुराई का शंसन करने वाला (नः) हमारा

(माकिः) मत (ईशत) स्वामी बन जाये। हम उसकी बातों में आकर पाप की ओर न बहक जायें।

भावार्थ- हमारे राष्ट्र के चारों वर्ण निष्पाप होकर अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुये राष्ट्र रक्षा में लग जायें।

अगले मंत्र में वर्णन है कि हमारे बाण कैसी हलचल मचायें।

सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता।
यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यंसन्॥

- ऋ. ६/७५/११

अर्थ- बाण के अग्रभाग में कंक पक्षी के पंख को लगाते हैं, इससे बाण की गति में तीव्रता आ जाती है। यह इषु (सुपर्णम्) पंख को (वस्ते) धारण करता है। (अस्याः) इस इषु का (दन्तः) दांत के समान आकार वाला अग्रभाग (मृग) शत्रुओं को खोजता सा है, (मृगय माणः) इन्हें विद्ध करने की कामना वाला होता है। (गोभिः सन्नद्धा) गोविकार स्नायुओं से बद्ध हुआ-हुआ यह इषु (प्रसुता) प्रेरित हुआ-हुआ सा (पतति) शत्रुओं पर पड़ता है। (यत्र) जहाँ युद्ध में (नरः) मनुष्य (संद्रवन्ति) मिलकर इधर-उधर गति वाले होते हैं, (च) और (चिद्रवन्चि च) विविध दिशाओं में अलग-अलग भाग खड़े होते हैं (तत्र) वहाँ रणांगण में (इषवः) ये बाण (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (शर्म यंसन) सुख को देने वाले हों।

भावार्थ- बाण के अग्र भाग में कंक पक्षी के पंख को लगाते हैं। यह बाण शत्रुओं को विद्ध करने की कामना वाला होता है। इससे शत्रुओं में भगदड़ मच जाती है। ये बाण युद्ध में हमारे लिए सुखकर बनते हैं।

अगले मंत्र में कहा गया है हमारे शरीर बाणों के लिए अभेद्य हों। कवच आदि के द्वारा हम अपनी रक्षा करने में समर्थ हों। इससे अगली ऋचा में कहा गया है कि एक कुशल सारथि कक्षा के समुचित प्रयोग से घोड़ों को रणांगण में तीव्रगति वाला कर देता है। युद्ध में हाथ की रक्षा के लिए हस्तघ्नः का उपयोग करते हैं। चौदहवीं ऋचा में इसका वर्णन है। युद्ध में जाते समय ही बाण के अग्रभाग को विष से बुझा लेते हैं जिससे शत्रु आसानी से मारा जा सकता है।

आलाक्ता या रुरुशीर्ष्ण्यथो यस्या अयो मुखम्।
इदं पर्जन्यरेतस इष्वै देव्यै बृहन्नमः॥

- ऋ. ६/७५/१५

अर्थ- बाण के अग्रभाग को विष में बुझा लेते हैं इससे (या) जो बाण (आल अक्ता) विष से सिक्त हैं, (रुरुशीर्ष्णी) मृग शृंग से जिसका अग्रभाग बना हुआ है, (अथ उ) और निश्चय से (यस्याः) जिसका (मुखम्) मुख (अयः) लोहे का बना हुआ है, (पर्जन्यरेतसे) पर्जन्य की कार्यभूत इस (देव्यै इष्वै) युद्ध में विजय की कामना वाली (दिव्) इषु के लिए (इदम्) यह (बृहत्) बहुत (नमः) आदर करते हैं। जिस सरकण्डे से इषु बना होता है वह बादल की वृष्टि से उत्पन्न होता है इसलिए उसे पर्जन्य रेतस कहा है।

भावार्थ- बाण बादल की वृष्टि से उत्पन्न सरकण्डे से बनाया जाता है। इसका अग्रभाग हिरण के सींग से बना होता है।

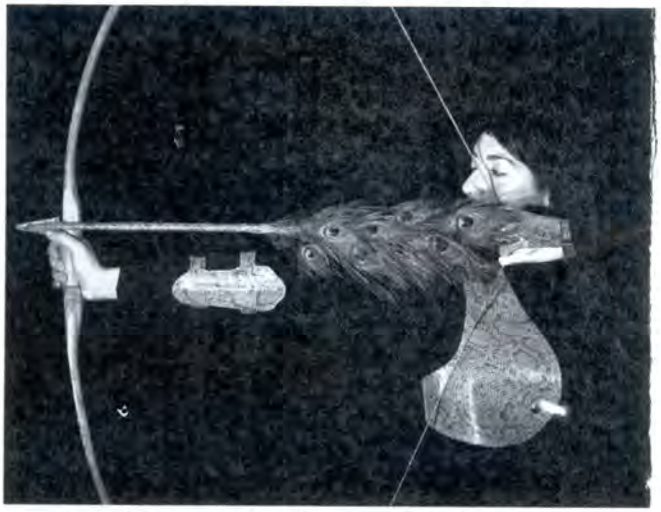

इसका मुख लोहे का बना होता है। बाण को विष में डुबो कर विषैला बनाया जाता है। इसके द्वारा शत्रु का विनाश किया जाता है।

अब एक ऋचा और लिख कर विषय को विराम देते हैं।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरूणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥

- ऋ. ६/७५/१८

अर्थ- तेरे मर्म स्थानों को कवच द्वारा आच्छादित करता हूँ। जीवन को दीप्त करने वाला सोम तुझे निरोगता से आच्छादित करे। द्वेष निवारक वरुण तेरे लिए विशालतर सुख देने वाले हों। राग, द्वेष आदि सब शत्रुओं को पराजित करते हुए सब देव तुम्हें हर्षित करने वाले हों।

शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा- ३२४००९ (राज.)

❑❑❑

वेदों के सन्दर्भ में धार्मिक परम्परा

आर्य सभ्यता एवं संस्कृति की पावन सरिता वेदों से ही समुद्भूत है। वैदिक काल में भारत को आर्यावर्त्त कहा जाता था जिसका अर्थ है- आर्या=श्रेष्ठ। 'ऋगतौ' धातु से 'ण्यत्' प्रत्यय होकर आर्य शब्द की व्युत्पति होती है। 'आर्याः यत्र वर्तते' तदाह आर्यावर्त्त। वाल्मीकि रामायण में अनेक बार राम के लिए आर्य का सम्बोधन किया गया है। कालान्तर में सिन्धु नदी के किनारे बसा होने के कारण मुगलकाल में 'हिन्दू' नामकरण हुआ। जिसको काफिर इत्यादि संज्ञा दी गई। उसी प्रकार अंग्रेजों की हुकूमत ने इसे INDIA नाम से सम्बोधित किया जिसको ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में पृष्ठ सं. ७८६ पर इसका अर्थ गुनाहगार, लुटेरा, गुण्डा इत्यादि बताया गया है। मनुस्मृति में कहा है- '**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**'। हिन्दू जाति वेदों को अपना सर्वस्व मानती है, सनातन कहती है। सार्वकालिक होने के कारण ही वेदों को सनातन कहते हैं। इस संसार में दो तत्त्वों को ही सनातन माना जाता है- वेद और भगवान। वेदों का प्रामाण्य आस्तिक ग्रन्थों में तथा वेदों का अप्रामाण्य जैन, बौद्ध तथा तार्किकों ने स्वीकार किया है। जिन विषयों का ज्ञान हमें अपने स्थूल नेत्रों से नहीं होता उनका ज्ञान सहज मिलने के कारण ही मनुस्मृति कहती है:-

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता॥

वेदों के अध्ययन-स्वाध्याय का फल पृथिवी के दान से भी अधिक महत्वशाली है।

शतपथब्राह्मण (११/५/६/३) में कहा है कि:-

यावनतं ह वाऽइमां पृथिवीं वित्तेन पूर्णां ददंलोकं जयति त्रिस्तावन्तं जयति भूयांसं चाक्षय्यं य एवं विद्वानहरहः स्वाध्यायमधीते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्यः।

संस्कृत भाषा के नियमों को आज तक यथावत् रखने वाली 'विश्व की अमूल्य कृति' अष्टाध्यायी है जिसका भाष्य किया महर्षि पतंजलि ने। वे कहते हैं कि '**ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मो षडंगो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च**'।

व्याकरण पढ़ने का प्रयोजन भी वेदों की रक्षा ही है- **रक्षोहागमलध्वसन्देहा प्रयोजनम्।**

धार्मिक एवं सामाजिक परम्परा के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि आज बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कहाँ तो एक ऐसा समय था जिसमें यज्ञीय संस्कृति का सर्वत्र प्रचार-प्रसार था। ब्राह्मण ग्रन्थों का यज्ञपरक व्याख्यान जिसमें लोकाचार, राजधर्म, आधिभौतिक आधिदैविक एवं आध्यात्मिक विषयों की मीमांसा हुआ करती थी। शतपथ ब्राह्मण कहता है कि '**यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म**' यज्ञपरक यज् धातु के अर्थ हैं- '**देवपूजासंगतिकरणदानेसु**।' देव शब्द देदीप्यमान तत्वों के विषय में कहा गया यथा- सूर्य, अग्नि, पृथिवी, सोम, जल इत्यादि। ठीक इसी प्रकार 'ब्राह्मण ग्रन्थों में '**विद्वांसो बै देवाः**' कहा गया है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में यज्ञ का देवता अग्नि को बताया गया है-

ओ३म् अग्निमिळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

ठीक इसी प्रकार यजुर्वेद का प्रथम मंत्र सविता (सूर्यदेव) का व्याख्यान करता है- **ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण .... यजमानस्य पशून् पाहि।**

किन्तु परिवर्तन की भी हद होती है। श्रुति प्रतिपादित श्रौत यज्ञ और स्मृति प्रतिपादित स्मार्तयज्ञ। जब श्रौत यज्ञों की प्रक्रिया को भी नहीं जाना जाता है उसके स्थान स्मार्तयज्ञों की कोई प्रासंगिकता नहीं होती है, जब चारों वेदों के प्रथम मंत्रों का यज्ञों में वाचन नहीं होता है तो उस 'यज्ञ' का क्या औचित्य है। जब यज्ञरूप प्रभु का स्थान भव्य मंदिरों, मठों, आश्रमों, सम्प्रदायों, मस्जिदों, गिरिजाघरों, देवालयों, शिवालयों, विविध सत्संग पीठों ने ले लिया तो वैदिक धर्म की दुहाई देना सर्वथा पाखण्ड (अन्धश्रद्धा) है, अपने आपको

सर्वथा धोखा देना है, यज्ञ शेष का ग्रहण पाप है।

वेदान्त का शंकराचार्य कृत भाष्य (१.३.३८) कहता है कि **'अथास्य वेदमृपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोतप्रतिपूरणं, वेदोच्चारणे, जिह्वाच्छेदः, धारणे शरीरभेद इति। स्त्रीशूद्रो नाधीयाताम् इति च'** अर्थात् स्त्रियों और शूद्रों को वेदों के सुनने का अधिकार नहीं है तो तथाकथित ब्राह्मणों से यह अपेक्षा की जाती है कि वेदानुकूल श्रौत यज्ञों का संचालन क्यों नहीं हो रहा है? वेदों के आदिमंत्रों का वाचन क्यों नहीं हो रहा है? ऐतरेय शतपथादि ब्राह्मण ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन, शोधकार्य इत्यादि क्यों नहीं हो रहा है? यास्ककृत निरुक्त ग्रन्थ का प्रवचन क्यों नहीं हो रहा है? कथावाचकों की योग्यता एवं पंजीकरण अनिवार्य क्यों नहीं होता है? महाभाष्य का प्रवचन एवं वेदों का प्रवचन क्यों नहीं हो रहा है? तथाकथित शास्त्रमर्मज्ञ, कर्मकाण्डी, मठाधीश वेदानुकूल यज्ञों का सम्पादन क्यों नहीं कर पा रहे हैं? वेदों पर शास्त्रार्थ क्यों नहीं करना चाहते हैं? शिक्षामंत्री क्यों कहते हैं कि हनुमान चालीसा पढ़कर विवाह संस्कार के यज्ञ में आहुतियाँ दी जा रही है? महाभारत में क्यों कहा गया कि विष्णुयाग विश्वजित् याग के समान ही है? युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण को जब अर्घ्य का सर्वसम्मत पात्र माना गया तो शिशुपाल द्वारा ईर्ष्यावशात् जो कृष्ण चरित्र को कलंकित किया गया उसे कथावाचक प्रेम और श्रद्धा के साथ महाभारत के आदर्श चरित्र की निन्दा करते नहीं थकते हैं? ईश्वर पर किए जाने वाले आक्षेपों के कारण ही इस देश में ईसाई मत का प्रचार प्रसार हो रहा है जिसकी किसी भी कथावाचक को चिन्ता क्यों नहीं होती है? शुद्ध लाभ वाला व्यापार ही क्यों अपनाया जाता है इन कथावाचकों द्वारा? ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्त गणित को न बताकर फलित के आधार पर लोगों को क्यों भ्रमित कर लूटा जा रहा है?

शैव सम्प्रदाय का मूल आधार यजुर्वेद के ३४ वें अध्याय को स्वीकार करते हैं जिसके अन्तर्गत गणेशोत्पत्ति गणपति की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा इत्यादि कथानक धार्मिक मान्यता में प्रतिष्ठित कर दिए गए जो सर्वथा वेद विरुद्ध हैं जिसका कोई तार्किक प्रमाण भी नहीं दे सकते हैं। ऐसी निर्मूल धारणा से समाज में असंतोष व्याप्त हो जाता है। जबकि वैदिक मान्यता में शिवसंकल्पसूक्त का भाव सर्वथा भिन्न है जो कि पूर्ण मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। उसका भाव यह है कि मन जागरणावस्था तथा स्वप्नावस्था में बहुत दूर-दूर तक चला जाता है। यह संसार में तीव्र गति से भागने वाला है। यह सर्वश्रेष्ठ ज्योति है, इसके द्वारा ही संसार के समस्त कृत्य किए जाते हैं। इसमें मन के तीन महत्वपूर्ण गुणों का वर्णन है- १. प्रज्ञान अथवा जानना (Cognition) २. चेतयत इति चित्तम् की व्याख्या के अनुसार स्मरण शक्ति या याद रखना (Recollection) ३. धृति या धारणाशक्ति (Retention)। यह सारे ज्ञान (Knowledge) और

बुद्धि (Intelligence) का खजाना है, आश्रय स्थल है। यह विश्व की समस्त चेतना का आधार है। अतः सुयोग्य सारथी के समान इस मन को अपने नियंत्रण में रखना चाहिए। ये भाव यजुर्वेद के ३४ वें अध्याय के प्रथम मंत्र **यज्जाग्रतो दूरमुदैति .... तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु** से मंत्र संख्या ६ तक है।

हमारी सामाजिक एवं धार्मिक परम्परा में आजकल **'श्री गणेशाय नमः'** इसके पश्चात् **'हरिः ओ३म्'** का उच्चारण किया जाता है फिर वेदों का संहिता पाठ किया जाता है। यह परम्परा वैदिक सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत है क्योंकि यजुर्वेद प्रतिशाख्य में कहा गया है- **ओंकारः स्वाध्यायादौ'** इसका अन्य प्रमाण यह है कि **'ओंकारश्चाथकारश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा, कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तेनेमौ मंगलावुभौ'** अपि च पाणिनी का सूत्र **'प्रणवष्टेः'** एवं **'ओमभ्यादाने'** (८/२/५७) ये सब प्रमाण हैं। वेदमंत्रों के प्रारम्भ में ओ३म् इस एकाक्षर प्रणवध्वनि का उच्चारण करना चाहिए। इसके विषय में याज्ञवल्क्य शिक्षा में कहा है- **प्रणवं तु प्लुतं कुर्यात्।** अतः महाभाष्य में उल्लेख मिलता है **'ओ३म् अग्निमिळे पुरोहितम्'** उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर सिद्ध होता है कि जो **'श्री गणेशाय नमः'** **'हरिः ओम्'** इत्यादि बोले जाते हैं वे सर्वथा त्याज्य हैं एवं इनका कोई सिद्धान्त प्रमाण भी नहीं देता है।

वैदिक मान्यता में अग्न्याधान करने का उल्लेख है जबकि आधुनिक धार्मिक मान्यता में पत्थरों में प्राणों की प्रतिष्ठा करने का पाखण्ड चल पड़ा है। यह सर्वथा वेद विरुद्ध है। वाल्मीकि रामायण एवं रामचरित मानस में **'कहाँ राजा भोज कहा गंगू तेली'** की चरितार्थता होती है। धार्मिक मान्यता में

रामचरितमानस को वेदों से भी अधिक मान्यता प्राप्त हो चुकी है इसी कारण तो घर-घर में गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस ,का पाठ किया जाने लगा है। यह एक राजवंश की ऐतिहासिक घटना का अतिश्योक्तिपूर्ण अविवेकाधारित एवं वैदिक मान्यता के प्रतिकूल वर्णनमात्र है। षोड्श संस्कारों को पूर्णतः विधिपूर्वक नहीं करवाया जाता है, मात्र कुछ ही संस्कारों से, फलित के तथ्यहीन विचारों से सम्पूर्ण आर्यावर्त्त को कलंकित परिवर्तित कर शुद्ध लाभवाली संस्थाओं का नित्य प्रति निर्माण किया जा रहा है। सत्यार्थ प्रकाश की ओर उन्मुख होने का जोखिम कोई नहीं उठाना चाहता है और सहज भाव से स्वीकार कर लिया जाता है '**वेदाः प्रमाणम्**' प्रामाण्यवाद की भी कोई सीमा होती होगी आखिर क्यों नहीं उसे परिणित किया जाता है। हिंसा सर्वथा हिंसा ही होती है उसे किसी भी प्रमाण द्वारा अहिंसा सिद्ध नहीं किया जा सकता है लेकिन आज भी हिंसा विषयक कृत्य यथावत् जारी हैं। '**वैदिक हिंसा हिंसा न भवति**' यह तर्क देकर हिंसा की जाती रही है जिसके विरुद्ध बौद्ध एवं जैन मतों का प्रचलन हुआ मानवता को एक नयी दृष्टि मिली, फिर भी बाज नहीं आते अन्धानुकरण करने वाले। हमारे राष्ट्र का अंतिम महर्षि जिसे जाना जाता है उसने १९वीं सदी में आर्यसमाज की स्थापना कर '**वेदों की ओर लौटो**' का

आह्वान किया एवं यज्ञ की वेदानुकूल मीमांसा प्रस्तुत कर कहा कि यज्ञ भी एक विज्ञान है' पर्यावरण का सर्वाधिक उपकार यज्ञ द्वारा ही संभव है, क्योंकि वैदिक मान्यता में यज्ञ निरन्तर चलायमान होता रहता है। वे तीन स्तर इस प्रकार हैं १. ब्रह्माण्डीय स्तर २. पिण्ड (शरीर) स्तर ३. भौतिक स्तर। संगतिकरण (यज्ञ) सर्वत्र व्याप्त होता रहता है, जिसके कारण ही सृष्टि चलायमान है, संगतिकरण के अभाव में सूर्य की (हीलियम+हाइड्रोजन) ज्योति भी सम्भव नहीं है।

पिण्ड स्तर पर जीवात् जीवोत्पत्ति नहीं हो सकती है। भौतिक यज्ञों के अभाव में पर्यावरण की शुद्धि भी कदापि नहीं हो सकती है। क्योंकि यज्ञ के लिए कहते हैं कि '**यज्ञो वै देवानात्मा यज्ञो वै प्रजापति यज्ञो वै वनस्पति अग्निषोत्मकं जगत्**' इत्यादि सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा होती है। सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ४५४ पर कुरान के पक्षपाती अल्लाह का पैगाम है कि 'और अपने हाथों को न रोकें तो उनको पकड़ लो और जहाँ पाओ,मार डालो।। मुसलमान को मुसलमान का मारना योग्य नहीं, जो कोई अनजाने से मार डाले बस एक गर्दन मुसलमान का छोड़ना है और खून बहा उन लोगों की ओर सौंपी हुई जो उस क़ौम से होवें, तुम्हारे लिये दान कर देंगे, जो दुश्मन की क़ौम से हैं। और जो कोई मुसलमान को जानकर मार डाले, वह सदैव काल दोजख़ में रहेगा उस पर अल्लाह का क्रोध और लानत है।' - मं.१। सि.५। सू.४। आ. ६१-६२-६३।।

अपि च 'और शिक्षा प्रकट होने के पीछे जिसने रसूल से विरोध किया और मुसलमानों से विरुद्ध पक्ष किया, अवश्य हम उसको दोज़ख में भेजेंगे।' - मं.१।सि.५।सू.४।आ.११५

दैनिक भास्कर में छपी २२ सितम्बर २०१३ की घटना में भी

स्पष्ट लिखा है कि केन्या में आतंकियों ने फायरिंग से पहले कहा जो मुस्लिम हैं वे निकल जाएँ, हम सिर्फ गैर मुस्लिमों को मारना चाहते हैं।

इसी प्रकार वैदिक धर्म को दूषित करने के लिए स्वार्थी तत्वों ने यज्ञीय कर्मकाण्ड में पशु हिंसा का प्रचलन प्रारम्भ किया। जिसका सायणाचार्य ने यथावत् हिंसापरक भाष्य किया जिसके विषय में महर्षि दयानन्द कहते हैं कि यज्ञीय प्रसंग में हिंसापरक भाष्य सर्वथा त्याज्य है क्योंकि धर्म के नाम पर इस देश में बड़े से बड़ा कुकृत्य किया जा सकता है। 'अध्वर' शब्द यज्ञ का पर्यायवाची है जिसका तात्पर्य है किसी भी प्रकार की हिंसा से रहित कर्म। पशु हिंसा का विरोध करने के कारण ही बौद्ध, जैन और चार्वाक मतों का प्रचलन हुआ। महाभारत में तो चार्वाक को राक्षस की संज्ञा दी गई जो सर्वथा अनुचित है। इतना सब कुछ होते हुए भी अन्धानुकरण बदस्तूर जारी है। आजकल भी काष्ठ प्रतिमा बनाकर पशु हिंसा का कुकृत्य किया जा रहा है। यहाँ तक कई मंदिरों में तो मांस एवं मदिरा का प्रचलन यथावत् है। महाभाष्य के 'सिद्धे शब्दार्थ सम्बन्ध' वास्तविक परिणाम कब फलीभूत होगा?

- रत्तीराम मीणा,
व्याख्याता, राजकीय आचार्य संस्कृत कॉलेज, बीकानेर

❑❑❑

समाचार

श्रीमती अन्नपूर्णा शर्मा का सम्मान

आर्यसमाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से आर्यसमाज की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती अन्नपूर्णा शर्मा का सामाजिक सेवाओं के लिए सम्मान किया गया। डॉ. अमृतलाल तापड़िया, भँवर लाल आर्य, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती ललिता मेहरा ने इन्हें

शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

२८ वाँ वेद पारायण यज्ञ

आचार्य सोमदेव शास्त्री के गांव नैनोरा जिला मन्दसौर, मध्यप्रदेश में दिनांक १५ मई से १८ मई २०१८ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं सत्संग तथा भजन व प्रवचन का आयोजन किया गया जिसमें अनेक पूज्य संन्यासी विद्वान् उपदेशक एवं भजनोपदेशकों ने भाग लिया।

– आयोजक– सोमदेव शास्त्री

विशाल आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में दिनांक २० मई से २७ मई २०१८ तक गीता भारती पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, फेज २ दिल्ली में विशाल कन्या आर्य चरित्र निर्माण शिविर का रचनात्मक आयोजन हुआ। जिसमें बालिकाओं ने विभिन्न आसनों एवं आत्मरक्षण का प्रशिक्षण प्राप्त किया। **– अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, दिल्ली**

स्वतंत्रता सैनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से निःशुल्क मेडिकल कैम्प

दिनांक १६ मई २०१८ को जिला अभिभाषक संघ सभागार न्यायालय परिसर अलवर में जिला अभिभाषक संघ, अलवर के सौजन्य से व स्वतन्त्रता सैनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल के सहयोग से निःशुल्क मेडिकल कैम्प का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न रोगों के निःशुल्क परामर्श, रियायती दरों पर जाँच एवं निःशुल्क दवाईयाँ वितरित की गयीं। **– आर्य समाज, अलवर**

सामाजिक कुरीतियों को दूर करने हेतु वेद प्रचार समारोह

दिनांक २० मई को विश्वम्भर सेवा न्यास फरीदाबाद में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु वेद प्रचार समारोह का आयोजन किया गया जिसमें संन्यासी, विद्वान् एवं भजनोपदेशकों ने अपने उद्बोधन प्रदान किए।

– श्रीमती रजनी गुलाटी, कार्यवाहिका राष्ट्रसेविका समिति, फरीदाबाद

वैदिक उपदेशक विद्यालय, लखनऊ में प्रवेश

लखनऊ नगर में वैदिक उपदेशक विद्यालय स्थापित किया गया है। विद्यालय में संस्कृत, व्याकरण, भारतीय दर्शन, वेद, उपनिषद, ऋषि दयानन्द योग इत्यादि विषय पढ़ाये जायेंगे। विद्यार्थियों के लिए आवास भोजनादि की व्यवस्था निःशुल्क होगी एवं कोई डिग्री नहीं दी जायेगी।

विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क करें- मोबाइल नं. ८८३६१८१६६०

आर्य वीरांगना दल शिविर

स्वामी सदानन्द जी के पावन सान्निध्य में दयानन्द मठ, दीनानगर के तत्वावधान में १ जून २०१८ से ९ जून २०१८ तक आर्य वीरांगना दल, शिविर एवं चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक व्यक्ति कृपया अपना पंजीकरण २०० रु. का अल्प शुल्क देकर ९४६३३८९०६५ एवं ९८८८६१५७३६ पर करवा सकते हैं।

वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर

दिनांक २६ मई से १ जून २०१८ तक आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू पर्वत, सिरोही में वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। **– आयोजक– आर्यवीर दल, राजस्थान**

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन ६, ७ एवं ८ जुलाई २०१८ को गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है।

श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल गौमत का १० वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक ११ से १३ मई तक श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल, गौमत जिला अलीगढ़ उत्तरप्रदेश में १० वाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया। जिसमें सामवेद पाठ, सत्संग एवं भजन के कार्यक्रम हुए।

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, दिल्ली

आर्य समाज, सिहोर का ८७ वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक २५ से २७ मई २०१८ तक आर्य समाज, सिहोर का २७ वाँ वार्षिकोत्सव ऋषि दयानन्द वाटिका, आर्य समाज मंदिर, गंज सिहोर में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। जिसमें सामूहिक यज्ञ, भजन, व्याख्यान आदि हुए। इस उत्सव में आर्य नेता, संन्यासी, आर्य भजनोपदेशक एवं विद्वानों ने सुन्दर उद्बोधन प्रदान किए।

४२ वाँ अन्तर्राज्यीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक २३ से २७ मई २०१८ तक बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज, गढहरा बरौनी के पुरुषार्थ से ४२ वाँ अन्तर्राज्यीय आर्य महासम्मेलन एवं यजुर्वेद परायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें बड़े-बड़े संन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक एवं आर्य नेता उपस्थित हुए।

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद में एक नया प्रकल्प प्रारम्भ

बिना परीक्षा दिए आर्ष प्रणाली में अष्टाध्यायी, धातुवृत्ति, महाभाष्य, निरुक्त तथा अन्य वेदांगों और उपांगों के अध्ययन के लिए जुलाई २०१८ में नया प्रकल्प गुरुकुल में प्रारम्भ किया गया है। प्रवेश हेतु कृपया संपर्क करें:- आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती, व्याकरणाचार्य, गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, जिला बिजनौर, उत्तरप्रदेश चलभाष- ९४१२८४४२४

२८ वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू पर्वत के तत्वावधान में २८ वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार सामारोह २६ से २८ मई २०१८ में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव में यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा ब्रह्मचारियों के द्वारा शास्त्रार्थ, व्यायाम आदि के प्रदर्शन आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए।

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता

हलचल

आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका और ग्रेटर अटलांटा वैदिक मंदिर, अटलांटा अमेरिका के तत्त्वावधान में दिनांक १६ से २२ जुलाई २०१८ को, अटलांटा, अमेरिका में आर्य महासम्मेलन होगा। सम्मेलन का विषय है 'आधुनिक युग में वैदिक मूल्य और उनकी साधना' उत्तर अमेरिका, भारत, नेपाल, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप और दुनिया के अन्य हिस्सों से आर्य समाज और वैदिक संगठनों के अनेक प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग लेंगे, जो पश्चिमी देशों में आर्य समाज से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं की समीक्षा करने का एक अनूठा नेटवर्किंग अवसर है। विश्व के कई प्रतिष्ठित अतिथि और स्पीकर आमंत्रित किये गये हैं। गणमान्य अतिथियों में, महामहिम आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश, भारत) और माननीय स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (संसद सदस्य, भारत) के आने की पुष्टि हो चुकी है।

इस कार्यक्रम में योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्य समाज से सम्बन्धित सम-सामयिक विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बन्धित चर्चाओं, और वयस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा, जिससे कि हम सभी अपने भौतिक, नैतिक/आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए संसार का भी उपकार करते चलें।

विभिन्न आर्य समाजों और आर्य संस्थाओं के सदस्य और नेता इन वार्षिक आर्य महासम्मेलनों का एक अभिन्न अंग रहे हैं। इस वर्ष भी सभी महानुभाव पहले से भी अधिक उत्साह से इन कार्यक्रमों में भाग लेंगे। आप सम्मेलन में भाग लेने का कार्यक्रम अवश्य बनाएँ और अपने मित्रगणों, आर्य समाजों और अन्य संस्थाओं को भी सूचित करें। युवाओं के लिए विशेष छूट उपलब्ध रहेगी।

आपसे अनुरोध है कि सम्मेलन के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www-aryasamaj-com/ams, पर जाएँ। पंजीकरण ऑनलाइन है और अनिवार्य है।

लगातार अपडेट के लिए सभा की फेसबुक पेज http://facebook-com/vedicamerica को लाइक कर सकते हैं। **- विश्रुत आर्य (प्रधान)**

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज हिरण मगरी, उदयपुर का वार्षिक निर्वाचन ३० अप्रैल १८ को चुनाव अधिकारी श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रीमती ललिता मेहरा को सर्वसम्मति से प्रधान, श्री संजय शांडिल्य को मंत्री, श्री

अम्बालाल सनाढ्य; कोषाध्यक्ष, श्री भंवर लाल आर्य एवं श्री कृष्ण कुमार सोनी को संयुक्त रूप से उप-प्रधान, श्री भूपेन्द्र शर्मा एवं श्रीमती सरला गुप्ता; उप-मंत्री, श्री मुकेश पाठक; प्रचार मंत्री, श्री राम दयाल मेहरा; पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किए गये। अन्तरंग कार्यकारिणी सदस्यों में डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्री अनन्त देव शर्मा, श्रीमती राधा त्रिवेदी व डॉ. एस. के. माहेश्वरी निर्वाचित हुए। **- राम दयाल (पुस्तकालयाध्यक्ष)**

प्रतिस्वर

श्री अशोक जी आर्य, सप्रेम नमस्ते।

आपके लेखों को पढ़ने में मुझे बहुत आनन्द आता है। आप जो सत्यार्थ सौरभ पत्रिका में लेख देते हैं वो इतनी सरल भाषा में होता है कि कम पढ़ा लिखा भी समझ जाता है। मेरी उम्र ७१ वर्ष है मुझे पढ़ने में बहुत आनन्द आता है। सत्यार्थ प्रकाश पहेली का जो कार्य चल रहा है इससे सत्यार्थ प्रकाश को बार-बार पढ़ने से आपके प्रश्नों का उत्तर दे पाता हूँ। इससे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने में अच्छा मन लगता है तथा हजारों व्यक्तियों में प्रचार-प्रसार बढ़ता है। इस पर मैं पूरी सम्पादन समिति को धन्यवाद देता हूँ। **- किशनाराम आर्य बीलू, नागौर**

विद्यार्थियों के लिए आर्यवीर दल शिविर का आयोजन

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, श्रीगंगानगर द्वारा दिनांक ३ से १० जून २०१८ तक विद्यार्थियों के लिए आर्यवीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। विद्यालयों से प्रार्थना है कि अपने विद्यालय से कम से कम १० विद्यार्थी इस शिविर में भेजें:- **संपर्क- प्रधान, आर्य समाज, श्रीगंगानगर, मोबाइल- ८७६४२४४१४२**

शोक संवेदना

ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त एवं आर्य क्रान्तिकारी नेता श्री अतर सिंह क्रान्तिकारी का दिनांक १४ मई २०१८ को निधन हो गया। सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०४/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/१८** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली, श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोवर्धनलाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री वासुदेवभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेवभाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेवभाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (भीलवाड़ा), श्री अन्नत लाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (राज.), श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.), श्री रमेशचन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), श्रीमती सुनीता सिंह भदौरिया; ग्वालियर (म.प्र.), श्री विनोद कुमार गुप्त; दिल्ली, ज्योति कुमारी; डेरोली अहीर (हरि.)। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १७ पर अवश्य पढ़ें।

स्वास्थ्य

जब पैरों में हो दर्द

एक अनुमान के मुताबिक वयस्क व्यक्तियों में लगभग ६० प्रतिशत को कभी न कभी पैरों में दर्द तथा क्रेम्प्स होते हैं। इनमें से भी २० प्रतिशत क्रानिक पैर दर्द से पीड़ित होते हैं। पैरो में दर्द के सही उपचार हेतु सर्वप्रथम तो कारण का जानना आवश्यक है। तभी उपचार की सही दिशा भी निर्धारित की जा सकती है। अनेक बार खान-पान में पोषक तत्त्वों की कमी से पैरों में दर्द बना रहता है। अतः यदि खान-पान में समुचित पोषक तत्त्वों के समावेश पर ध्यान दे दिया जाय तो पैर के दर्द से काफी हद तक घरेलू स्तर पर राहत प्राप्त की जा सकती है। यहाँ ऐसे ही कुछ पोषक तत्त्वों की चर्चा की जा रही है। सर्वश्रेष्ठ तो यह है कि इन पोषक तत्त्वों से युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन किया जाय परन्तु आवश्यक हो तो इन हेल्थ सप्लीमेंट्स को गोली, कैप्सूल आदि में भी ले सकते हैं।

१. **पोटेशियम**- विन्टरस्क्वेश, स्वीट पोटेटो, ब्रोकोली में प्रचुर मात्रा में पोटेशियम होता है। जहाँ तक हो सके इन सब्जियों को बिना उबाले खा लेना चाहिए। उससे पोटेशियम की मात्रा सुरक्षित रहती है।

२. **मैग्नीशियम**- मैग्नीशियम में पैरों में क्रेम्प्स रोकने की क्षमता होती है। इसके साथ ही मैग्नीशियम से युक्त खाद्य पदार्थ खाने से हार्ट व मधुमेह के रोगियों को भी लाभ होता है। इसके लिए गहरी हरी पत्तियों वाली सब्जियों, नट्स-सीड्स, सोयाबीन आदि का सेवन करना चाहिए।

३. **ग्लूकोसेमीनसल्फेट**- डॉ. एंड्रयू वील के अनुसार रोजाना की गतिविधियों के कारण जोड़ों के कार्टिलेज घिस जाते हैं उन्हें ग्लूकोसेमीन सल्फेट रिपेयर करने हेतु सामग्री प्रदान करता है। शरीर के जोड़ों के कार्टिलेज में पाए जाने वाले म्यूकोपोली सक्राइड को बनाने हेतु कच्चा माल ग्लूकोसेमीन सल्फेट ही है।

डॉ. वील के अनुसार ही कोंड्रोईटिन नाम का तत्व भी नए कार्टिलेज के निर्माण को उत्प्रेरित करता है। उनके अनुसार अदरक, हल्दी व ओरगेनिक तरीके से उगायी फल-सब्जियाँ भी लाभदायक होती हैं।

४. साइटिका के पैर दर्द के लिए आराम के अतिरिक्त गर्म व ठंडी उपचार पद्धति के साथ फिजिओथिरेपी प्रयुक्त की जाती है। परन्तु लाल मिर्च के अन्दर पाए जाने वाले केपसैसिन के पैच पैर की त्वचा पर लगाने से आराम मिलता है। साइटिका के पैर दर्द में क्लीनिकल ट्रायल किये गए हैं। कुछ रोगियों के खाली पैच लगाए गए तो अन्य के केप्सैसिन युक्त पैच। दूसरे ग्रुप के रोगियों को निश्चित राहत मिली।

५. डॉ. एक्स के अनुसार एप्सम साल्ट में मैग्नीशियम तथा सल्फेट ज्यादा होता है। अगर गुनगुने पानी के टब में दो कप एप्सम साल्ट डाल कर पैरों की सिकाई की जाय तो तुरन्त लाभ पहुँचता है।

६. **ठण्डी सिकायी**- अगर ज्यादा चलने से पैर दर्द होता है तो ठंडी सिकाई भी लाभ देती है। एक थैली में बर्फ के टुकड़े लेकर १० से १५ मिनट तक सिकाई करें।

कथा सरित

कुछ लोग अपने जीवन में परोपकार को सर्वाधिक महत्त्व देते हैं, चाहे इसमें उन्हें स्वयं को नुकसान ही क्यों न उठाना पड़े और यहाँ तक कि अपनी जान भी क्यों न कुर्बान करनी पड़े। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्य को परिभाषित करते हुए इसी गुण को महत्त्व दिया है। नीरजा भनोट को कौन भुला सकता है जिसने आतंकवादियों से लोहा लेते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

सभी जानते हैं कि एयर होस्टेस के लिए बुद्धि, चातुर्य, विनम्रता के साथ सौन्दर्य का कितना महत्त्व है पर एक नन्हे बालक को बचाने के लिए एक एयर होस्टेस ने अपने रूप की परवाह नहीं की।

गुलाफा शेख मुम्बई से अहमदाबाद जा रहीं थीं। चेक इन की औपचारिकताओं के क्रम में जब वे सुरक्षा डेस्क से निकल रहीं थीं तो उनकी गोद से उनका नन्हा सा बालक फिसल गया। जेट एयरवेज की एयर होस्टेस मितान्शी वैद्य वहाँ खड़ी थीं उनकी नजर इस दृश्य पर पड़ी। सहायता करने में उन्हें चोट आ सकती है इसका उन्हें भान था, सहायता करें या न करें उन्हें यह निर्णय सेकण्ड के भी सौंवे हिस्से में लेना था और उन्होंने मानवोचित निर्णय ही लिया और बच्चे को माँ की बाहों

दुआओं में याद रखना

से फिसलता देख उसे बचाने के लिए छलांग लगा दी और इस प्रकार उन्होंने बच्चे का बाल भी बांका नहीं होने दिया, हाँ उन्हें नाक पर अवश्य चोट आयी। ये चोट का निशान स्थायी रूप से भी रह सकता है पर उन्हें इसका मलाल नहीं है उन्हें प्रसन्नता है कि वे बच्चे को बचा सकीं। स्वाभाविक है कि गुलाफा के मन में मितान्शी के प्रति कृतज्ञता के भाव हैं। उन्होंने जी भरकर कृतज्ञता का ज्ञापन करते हुए कहा कि वे किस प्रकार मितान्शी का एहसान उतार सकती हैं। मितान्शी ने विनम्रता पूर्वक कहा कि यह तो उसका कर्तव्य था जो एयर होस्टेस की ट्रेनिंग में उन्हें सिखाया जाता है।

बच्चे की माँ ने फिर हठ की कि वे मितान्शी के लिए कुछ करना चाहती हैं, तो मितान्शी ने मुस्कराकर एक छोटा सा वाक्य कहा और आगे अपनी ड्यूटी पर बढ़ गयीं। वो वाक्य था- 'हमें अपनी दुआओं में याद रखना।'

ऐसे कर्तव्यनिष्ठ लोग मानव मूल्यों की स्थापना के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। इनका अनुकरण अवश्य करना चाहिए।

□□□ प्रस्तुति- डॉ. प्रिया अग्रवाल, उदयपुर

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०६३१४५३५३७६
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें
प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

सत्यार्थ-पीयूष

नियम है तो नियामक भी है

संसार में उपस्थित अभूतपूर्व नियमबद्धता के दर्शन हेतु विज्ञान जगत् से केवल एक उदाहरण पर विचार करें।

मेण्डलीफ नामक वैज्ञानिक ने जब उपलब्ध तत्त्वों के गुणों पर विचार किया तो उसे इनमें एक अपूर्व क्रमबद्धता के दर्शन हुए। तब उसने बढ़ते हुए आणविक भार के क्रम में एक सारणी बनाई जिसे आवर्त सारिणी कहते हैं। इसमें बीच बीच में कुछ स्थान रिक्त रह गये क्योंकि उस समय तक उस क्रम पर आने वाले तत्त्वों की खोज नहीं हो पाई थी। पर मेण्डलीफ ने अभूतपूर्व नियमबद्धता पर विश्वास करके उन तत्त्वों की उपस्थिति की भविष्यवाणी की तथा यह भी बता दिया कि उन तत्त्वों की खोज होने पर उनमें तत् तत् गुण पाये जायेंगे। अगर सब कुछ अकस्मात् होता तो क्या मेण्डलीफ की भविष्यवाणी (जो तुक्का न होकर सुव्यवस्थित नियमों के अध्ययन के आधार पर थी यद्यपि बाद में इसमें कुछ संशोधन व परिवर्धन भी हुए) सच हो सकती थी?

सृष्टि में अन्तर्निभरता के सैंकड़ों उदाहरण हैं। क्या यह सब अकस्मात् हैं?

कदापि नहीं। इस अन्तर्निभरता का एक दिलचस्प उदाहरण देखिये जो अंजीर के पौधे तथा छोटे ततैये की प्रजाति के बीच है। इन दोनों का कार्य एक दूसरे के बिना नहीं चल सकता। क्योंकि ततैये के अण्डे अंजीर के पुष्पगुच्छ में सेये जाते हैं जबकि मादा ततैया अंजीर में परागण क्रिया में सहायक होती है, अर्थात् पुष्प के स्त्री पुष्पों तक परागकण ततैये के माध्यम से ही पहुँच सकते हैं।

अंजीर में दो प्रकार के पुष्पगुच्छ पैदा होते हैं। एक में स्त्री पुष्प तथा पुं-पुष्प दोनों होते हैं दूसरे में केवल स्त्री गुच्छ ही होते हैं।

इन पुष्पों के अन्दर अतीव ही कठिनाई से पहुँचा जा सकता है। घुसने वाले के शरीर की टूट-फूट अवश्यम्भावी है फिर भी यह पुरुषार्थ मादा ततैया करती है। ऐसा करने में उसके पंख भी टूट जाते हैं।

अन्दर घुसकर मादा ततैया अण्ड-निक्षेप करती है। और मादा ततैया मर जाती है। पर उसके अण्डे पुष्प गुच्छ में सेये जाते हैं तथा ततैया के बच्चे पुष्प में ही जन्म लेते हैं। इनमें से केवल स्त्री ततैया ही बाहर निकल पाते हैं, पुं-शावक मर जाते हैं। (विचारना चाहिए ऐसा क्यों? यह व्यवस्था किसने बनायी?)।

ततैये का सन्तति क्रम तो आगे बढ़ गया, अब बारी अंजीर की है। ये स्त्री ततैये गुच्छ छोड़ते समय अपने परों पर पराग लिये जाते हैं तथा उसे दूसरे पुष्प तक ले जाते हैं। जब ये पराग से भरी मादा ततैया अंजीर के ऐसे पुष्पगुच्छ तक पहुँचती है जिसमें केवल स्त्री पुष्प हैं तो अन्दर घुसकर अण्ड निक्षेप किये बिना मर जाती है पर इन पुष्पों को परागयुक्त कर जाती है जिससे फूलों का परागण हो, बाद में अंजीर पैदा होते हैं। यहाँ यह भी विचारणीय है कि मादा ततैया बिना अण्ड निक्षेप के मर क्यों जाती हैं? वनस्पतिविदों का जवाब है कि ये स्त्री पुष्प इतने लम्बे होते हैं कि वह अपने अण्डे छोड़ने के लिए, पुष्प के तल तक नहीं पहुँच पाती। हमारा निवेदन है कि यह कैसे मर जाती है का उत्तर है। 'क्यों मर जाती है' का एक मात्र उत्तर ईश्वरीय व्यवस्था है।

आईन्सटीन, आर्किमिडिज, न्यूटन आदि महान् वैज्ञानिकों ने अथक परिश्रम से प्रकृति में व्याप्त नियमों को खोजकर जो सिद्धान्त प्रवर्तित किये, क्या वे अकस्मात् की धारणा के चलते सम्मान प्राप्त कर सकते थे? कदापि नहीं। वस्तुतः न जाने हम क्यों इस बात तो विस्मृत कर देते हैं कि हर नियम ही अपने निर्माता के अस्तित्व की पुष्टि करता है क्योंकि वैज्ञानिक नियमों के खोज करने वाले हैं न कि उन्हें बनाने वाले। जब भी कोई मनुष्य किसी नियम की खोज करता है वह नियम चिल्ला चिल्लाकर कहता है कि मैं तो पहले से ही विद्यमान था तुमने तो मुझे खोज निकाला मात्र है।

□□□

- अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाब बाग

ईश्वर सृष्टिकर्त्ता है-

एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या।
इन्द्राय सोमपीतये॥ - ऋ १/८/१०

जैसे संसार में किसी के द्वारा बनाए हुए पदार्थों को देखकर उसको बनाने वाले की प्रशंसा होती है, वैसे ही जगत् के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सूर्य आदि समस्त उत्तम पदार्थों से और उनकी रचना से (उनके वर्णन से) वेदों में ईश्वर के ही धन्यवाद हैं। इस (ईश्वर) के तुल्य अथवा इससे अधिक किसी अन्य की स्तुति नहीं हो सकती।

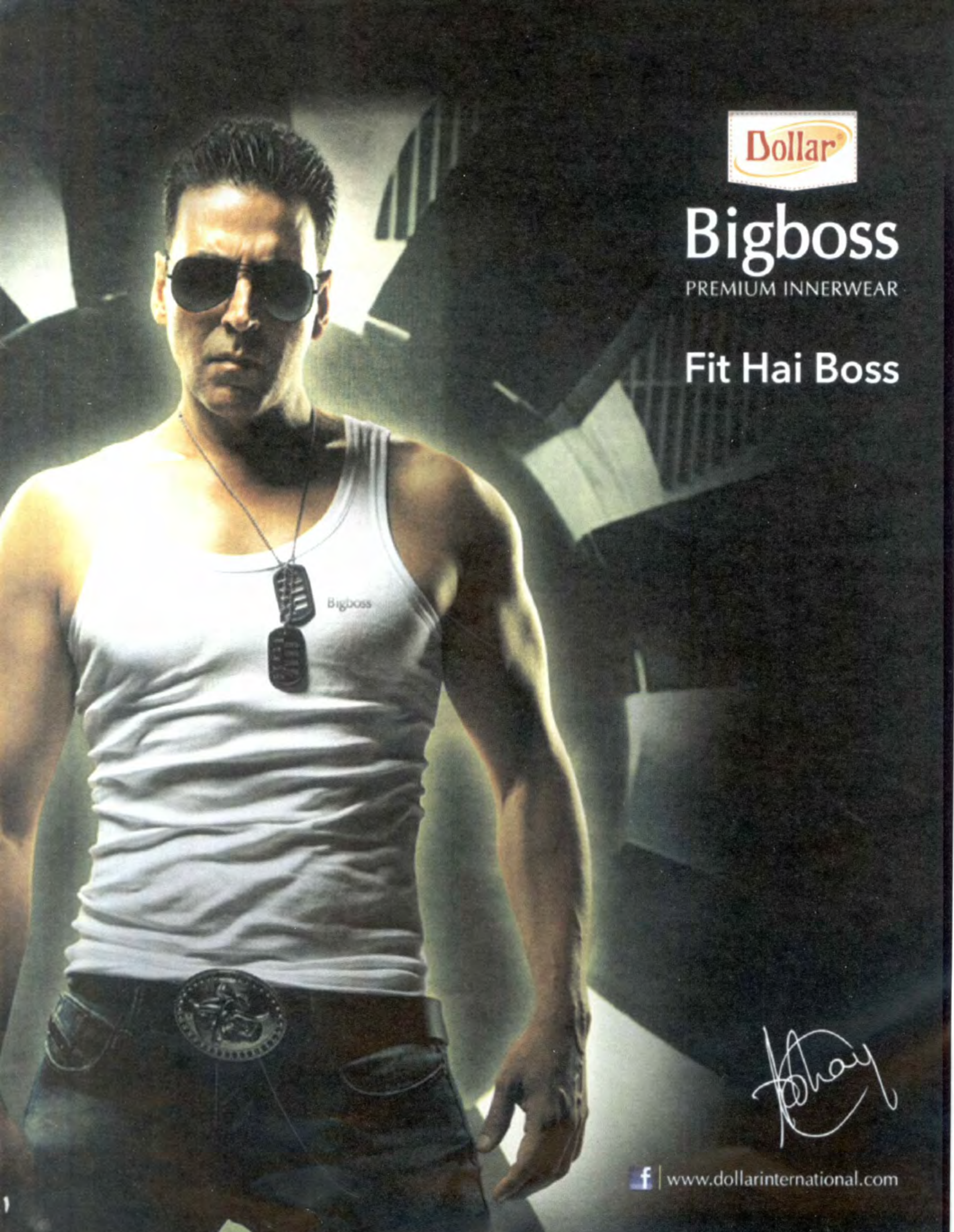
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June-2018 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जो सन्ध्या-सन्ध्या काल में होम होता है, वह हुतद्रव्य प्रातःकाल तक वायु शुद्धि द्वारा सुखकारी होता है। जो अग्नि में प्रातः-प्रातः काल में होम किया जाता है, वह-वह हुतद्रव्य सायंकाल पर्यन्त वायु के शुद्धि द्वारा बल, बुद्धि और आरोग्य कारक होता है। इसीलिये दिन और रात्रि के सन्धि में अर्थात् सूर्योदय और अस्तसमय में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिये।

सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ९९

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 कृष्णदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर